लोक कथाओं में शाप–3

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Lok Kathaon Mein Shaap-3 (Curse in Folktales-3)
Cover Page picture : Cursing
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail : hindifolktales@gmail.com
Website : www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
लोक कथाओं में शाप–3 7
1 कैलेबाश का बच्चा 9
2 तालाब का रक्षक 21
3 सात सिर वाला सॉप 27
4 बड़ा ख़रगोश और आत्मा 42
5 सॉप सरदार 49
6 मेंढकी राजकुमारी 57
7 फ़ैनिस्ट बाज़ 74
8 सबसे सुन्दर राजकुमारी 91

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में शाप–3

वरदान देना या इच्छाऐं पूरी करना, शाप देना या जादू डालना लगभग सभी समाजों के जीवन का एक मुख्य अंग है। कहीं लोग किसी भी चीज़ से खुश हो जाते हैं तो उसको वर दे देते हैं या उसकी कोई इच्छा पूरी कर देते हैं और अगर नाराज़ हो जाते हैं तो उसको शाप दे देते है या फिर उसके ऊपर जादू डाल देते हैं।

इससे पहले हमने दो पुस्तकें प्रकाशित की थीं – "इच्छाऐं इच्छाऐं इच्छाऐं" और "वरदानों का कमाल"[1] जिनमें से पहली पुस्तक में कुछ ऐसी लोक कथाऐं थीं जिनमें लोगों की इच्छाऐं पूरी की गयी थीं। वह बात अलग है कि उन्होंने वे इच्छाऐं खुद ही बतायीं या फिर देने वाले ने पूछीं या फिर देने वाले ने खुद ही अपनी तरफ से उनकी कोई वर दे दिया और फिर उन्होंने अपनी उन इच्छाओं का किस तरह इस्तेमाल किया। दूसरी पुस्तक में हमने दुनियॉ के देशों की कुछ ऐसी लोक कथाऐं दी थीं जिसमें वरदानों का कमाल दिखाया गया था। ये दोनों पुस्तकें तुम लोगों ने बहुत पसन्द कीं।

अब तुम्हारे हाथों में है यह पुस्तक जिसमें शापों या जादू डालने वालों ने हलचल मचायी हुई है। क्योंकि शाप देना और जादू डालना दोनों करीब करीब एक सी ही बात है इसलिये इन शाप वाली लोक कथाओं में जादू डालने वाली लोक कथाओं को भी शामिल कर लिया गया है। उन सबको जिन पर यह शाप या जादू डाला गया उस शाप या जादू की वजह से कितनी मुश्किलें उठानी पड़ीं और फिर वे सब उन शापों से कैसे आजाद हुए यही इस पुस्तक की लोक कथाओं का विषय है।

इस विषय की भी तीन पुस्तकें पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं – "लोक कथाओं में शाप–**1**" "लोक कथाओं में शाप–**2**" और "लोक कथाओं में शाप–**3**"। इसकी पहली पुस्तक में यूरोप के इटली देश की शाप और जादू डालने वाली लोक कथाऐं थीं। इसकी दूसरी पुस्तक में यूरोप के दूसरे देशों की शाप और जादू डालने वाली लोक कथाऐं थीं। और अब इसकी तीसरी पुस्तक में दुनियॉ के दूसरे देशों की शाप और जादू डालने वाली लोक कथाऐं हैं।

इन सब पुस्तकों में हम दुनियॉ की कुछ ऐसी लोक कथाऐं की प्रकाशित कर रहे हैं जिनमें लोगों ने दूसरों को जानवर बन जाने के शाप दिये हैं या फिर उनके ऊपर जानवर बन जाने का जादू डाल दिया है या फिर किसी और प्रकार का शाप दिया है। फिर दूसरे लोगों ने उनको उन शापों या जादुओं से उनको कैसे आजाद कराया है।

इसी तरह की एक पुस्तक हमने और प्रकाशित की थी "सोती हुई सुन्दरी जैसी कहानियॉ"[2]। सामान्य रूप से वे सब कहानियॉ भी शाप या जादू डालने जैसी ही हैं पर वे सब कहानियॉ इस पुस्तक में शामिल नहीं की गयी हैं क्योंकि उन सबमें सामान्यतया सब लड़कियॉ ही हैं और शाप या जादू के असर से वे सब सो जाती हैं। फिर कोई राजकुमार या कोई आदमी आता है और उनको उठाता है मगर इस पुस्तक की कहानियों में ऐसा नहीं है इसलिये हमने उन कहानियों को अलग ही रखा हुआ है।

तो लो पढ़ो शाप और जादू की ये बहुत सारी लोक कथाऐं – कुछ सुनी कुछ अनसुनी कुछ कही और कुछ अनकही। आशा है कि हमारे लोक कथाओं के दूसरे सग्रंहों की तरह तुम्हें यह संग्रह भी पसन्द आयेगा।

---

[1] "Ichchhayen Ichchayen Ichchayen", by Sushma Gupta in Hindi language
"Varadanon Ka Kamal", by Sushma Gupta in Hindi language

[2] "Sotee Huee Sundaree Jaisee Kahaniyan", by Sushma Gupta in Hindi language

1 कैलेबाश का बच्चा[3]

शाप की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

इस लोक कथा में एक लड़की को शाप दिया जाता है कि वह तब तक कैलेबाश बनी रहेगी जब तक कि लोग उसको कैलेबाश की बेटी कहते रहेंगे। है न कुछ अजीब सा शाप?

पर इससे भी अजीब बात यह है जो शब्द मुँह से निकल गये वे तो निकल गये वे तो वापस आ नहीं सकते तो वह लड़की इस शाप से छूटी कैसे। आओ पढ़ते हैं नाइजीरिया की इस लोक कथा में।

एक बार की बात है कि नाइजीरिया में एक राजा और रानी थे। उनकी शादी को कई साल हो चुके थे पर उनके कोई बच्चा नहीं था। जैसे जैसे राजा बड़ा होता जा रहा था वह सोचता रहता था कि उसके बाद उसका वारिस कौन बनेगा।

उसकी पत्नी भी इस बात को ले कर बहुत चिन्ता करती थी। वे दोनों दिन रात अपने भगवान "ची"[4] से एक बच्चे के लिये प्रार्थना करते रहते।

---

[3] The Calabash Child – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa.
Adapted from the Book, "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2001. Hindi translation of this book can be obtained from hindifolktales@gmail.com as an e-book free of charge.

[4] Chi – their personal god

इस राजा ने भी बहुत सारे राजाओं की तरह कई एकड़ जमीन में खेती की थी और रानी ने भी जैसा कि अक्सर रानियाँ नहीं करती हैं उन खेतों की देखभाल में बहुत समय लगाया था।

रोज वह बहुत सारे नौकर ले कर खेत पर जाती और उनकी देखभाल करती। शाही घर की स्त्री होते हुए भी उसने कोकोआ याम, बीन्स और कैलेबाश[5] के खेत लगाये थे।

इस साल रानी के खेतों की फसल बहुत अच्छी हुई थी। कोकोआ याम की पत्तियाँ पहले से ज़्यादा हरी और चौड़ी थीं। बीन्स और कैलेबाश के पौधे भी अपने खेतों की हदों से बाहर निकले पड़ रहे थे।

रानी यह सब देख कर बहुत खुश थी। उसको पूरी उम्मीद थी कि इस बार उसकी फसल बहुत अच्छी होगी। समय आने पर पौधे बड़े हुए, उनमें कलियाँ आयीं और फिर फल भी आने लगे।

एक दिन रानी सुबह मुर्गे के बाँग देने से भी पहले जाग गयी। उसने अपनी सुबह की प्रार्थना की और हमेशा की तरह भगवान से

[5] Calabash is a dry outer cover of a pumpkin-like fruit used to keep dry or wet things

अपने लिये एक बच्चा माँगा। फिर वह अपनी खेती की देखभाल के लिये अपने खेतों पर चली गयी।

उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने कैलेबाश के एक पौधे के पास एक छोटी सी बच्ची को बैठे देखा। रानी को देखते ही वह बोली — "ओजीफ़ी[6] नमस्ते।"

"नमस्ते मेरी बेटी। तुम यहाँ इतनी सुबह सुबह इस खेत पर क्या कर रही हो? और तुम्हारी माँ कहाँ है? क्या उसको पता है कि तुम यहाँ इस तरह अकेली बैठी हो?"

लड़की ने जवाब दिया — "यही मेरा घर है।"

रानी तो यह सुन कर गड़बड़ा गयी। उसकी कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह लड़की कह क्या रही थी। यह खेत तो गाँव के किसी भी घर से बहुत दूर था और उसको लगा कि उस लड़की को तो मालूम ही नहीं था कि वह कह क्या रही है।

उसने फिर कहा — "पर बेटी, सबसे पास के घर से यहाँ तक आने के लिये तो एक मजबूत आदमी को भी मुर्गे की दूसरी बाँग से ले कर दोपहर तक का समय चाहिये। और मेरे बच्चे तुमको तो इससे भी ज़्यादा समय चाहिये। तुम यहाँ आ कैसे गयीं?"

पर वह लड़की केवल मुस्कुरा दी। उसने अपने आपसे ही कुछ शब्द बड़बड़ाये और अचानक वह एक कैलेबाश में बदल गयी और

[6] Ojiefi

वह कैलेबाश रानी के पैरों की तरफ लुढ़क गया। रानी के पैरों में आ कर वह फिर से एक बच्ची में बदल गया।

रानी तो यह देख कर आश्चर्य और डर में डूबी खड़ी रह गयी। पर उसकी बच्ची को पाने की इच्छा ने उसके हर डर को जीत लिया और उसने बच्ची को अपने घर चलने के लिये कहा। उसने बच्ची से वायदा किया कि वह उसकी बहुत अच्छी तरीके से देखभाल करेगी।

लड़की यह सुन कर बहुत खुश हुई कि रानी उसको अपनी बेटी बनाना चाहती थी पर उसको लग रहा था कि यह कोई अच्छा विचार नहीं था।

वह रानी से बोली — "मुझे आपकी बेटी बनना बहुत अच्छा लगेगा। मुझे मालूम है कि जो कोई स्त्री किसी बच्चे की इतनी अच्छी देखभाल करेगी वह जरूर ही बहुत अच्छी मॉ बनेगी।

मैं दूसरे लोगों के साथ भी रही हूँ पर मुझे उनके साथ रहने का कोई बहुत अच्छा अनुभव नहीं है। इसी लिये मैंने यहॉ अकेले रहने का निश्चय किया है।"

पर रानी अपने इरादों में पक्की थी। उसने लड़की से बहुत जिद की कि वह उसके साथ चले। उसने फिर से उससे वायदा किया कि वह उस लड़की को बहुत अच्छी तरह से रखेगी न कि और दूसरे लोगों की तरह।

लड़की बोली — "ठीक है, मैं तुम्हारे साथ चलूँगी पर मेरी एक शर्त है। मुझे मालूम है कि मैं एक कैलेबाश से निकली हूँ फिर भी मैं एक कैलेबाश की बेटी कहलाने से नफरत करती हूँ। जिस दिन भी कोई मुझे कैलेबाश की बेटी कहेगा वह दिन मेरा तुम्हारे साथ आखिरी दिन होगा।"

रानी बोली — "मैं तुमसे वायदा करती हूँ कि कोई तुमको कैलेबाश की बेटी नहीं कहेगा। मैं राजा की पत्नी हूँ और जो मेरे पति कह देते हैं वह कानून होता है।"

वह बच्ची राजी हो गयी और रानी के साथ उसके घर चली गयी। राजा की पत्नी बहुत खुश थी। वह उसको गले से लगा कर खुशी से रो पड़ी।

आखिर उसको अपना एक बच्चा मिल गया था जिसको वह गले से लगा सकती थी, जिसके लिये वह खाना बना सकती थी और जो उनके बुढ़ापे में उनको खुशी देता।

जब वे घर आये तो रानी ने खेत पर जो कुछ भी हुआ वह राजा से कहा और फिर उसको यह बताया कि किस तरह उसने इस बच्ची को पाया था।

राजा भी उस बच्ची को देख कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने सारे आदमियों को बुलाया और गॉव भर में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं। राजा को आखिर एक बच्चा मिल गया था जो उसका वारिस बनता।

राजा ने उस लड़की का नाम ओनूनेलियाकू[7] रखा जिसका मतलब होता है "पैसा खाने वाली", और रानी ने उसका नाम रखा इफ़ेयिन्वा[8] जिसका मतलब होता है "बच्चे के बराबर कोई नहीं"।

इसके बाद राजा ने सबको मना कर दिया कि वे उसको कभी भी कैलेबाश की बच्ची कह कर नहीं पुकारेंगे। अगर किसी ने भी कभी भी उसे इस नाम से पुकारा तो उसे मौत की सजा दी जायेगी।

लोगों ने राजा की लड़की की खबर को बड़े अच्छे तरीके से लिया और वे बहुत दिनों तक दावतें खाते रहे और नाचते रहे। राजा भी बहुत खुश था। उसने अब अपना दूसरा नाम रख लिया था ओबियाजुलू[9] जिसका मतलब होता है "आखीर में शान्ति"।

ओनूनेलियाकू बड़ी हो कर एक बहुत ही सुन्दर स्त्री बन गयी। पास और दूर देशों से राजकुमार उससे शादी की इच्छा प्रगट करने लगे पर राजा ने उसकी शादी करने से मना कर दिया। उसने कहा यह मेरी एकलौती बच्ची है मैं चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद यही मेरी वारिस हो।

हालाँकि कुछ लोग एक लड़की के राजा होने के विचार से खुश नहीं थे पर उनके पास और कोई चारा नहीं था सिवाय इसके कि वे भी राजा की खुशी में खुशी मनायें।

[7] Onunaeliaku – means "born to consume wealth".
[8] Ifeyinwa – means "nothing like a child"
[9] Obiajulu – means "finally at peace"

राजा अपनी बेटी ओनूनेलियाकू को कभी अपनी ऑखों से दूर नहीं करता था। उसके पास इतने नौकर थे कि उसने कई नौकर तो केवल उसी की देखभाल और सेवा के लिये दे रखे थे। उसने उसे वह सब कुछ दे रखा था जो उसे चाहिये था।

ओनूनेलियाकू ने भी अपने आपको गॉव की ज़िन्दगी में ढाल लिया था और वह राजकुमारी लगती भी थी।

एक दिन राजा और रानी को कहीं बाहर जाना था। उन्होंने अपने सारे नौकरों को बुलाया और कड़ी ताकीद कर दी कि वे राजकुमारी को एक मिनट के लिये भी अपनी ऑखों से ओझल न होने दें और जो वह कहे वह कर दें। उसको कोई नुकसान नहीं पहुॅचना चाहिये।

राजा और रानी के जाने के काफी देर बाद ओनूनेलियाकू को भूख लगी सो उसने नौकरों से अपने लिये खाना बनाने के लिये कहा। उन्होंने कहा कि खाना अभी तैयार होता है।

वह इन्तजार करती रही पर उसका खाना नहीं आया। अब उसको भूख और ज़्यादा लगने लगी तो वह देखने गयी कि क्या मामला है। वह बोली — "मुझे बहुत भूख लगी है। क्या अभी तक खाना तैयार नहीं है?"

नौकरों ने पूछा — "कैसा खाना? हा हा हा हा।"

नौकर उसके ऊपर हॅस पड़े और बोले — "अगर तुमको खाना खाना है तो अपना खाना खुद बना लो।

हम लोग तो इसी दिन के इन्तजार में थे कि कब राजा और रानी यहॉ से जायें तो हम लोग भी कुछ आनन्द मनायें। क्या यह काफी नहीं है कि वे हमको तुम्हारे आस पास छोड़ गये हैं। ओ कैलेबाश की बच्ची।"

यह सुन कर ओनूनेलियाकू बहुत दुखी हुई। उसकी ऑखें रोते रोते लाल और भारी हो गयीं। वह अपने कमरे में वापस चली गयी और वहीं लेटी लेटी बहुत देर तक रोती रही।

फिर उसने वह सारी चीज़ें छोड़ दीं जो राजा ने उसे दी थीं। उसने अपने पुराने कपड़े पहने जिनमें रानी ने उसको पहली बार देखा था और वह पिछले दरवाजे से निकल कर राजा के महल की चहारदीवारी से बाहर चली गयी।

राजा और रानी उसी शाम को वापस लौट आये पर उनको अपनी बेटी ओनूनेलियाकू कहीं दिखायी नहीं दी जो उनका स्वागत करती और उनके गले लगती।

राजा ने पुकारा ओनूनेलियाकू, ओनूनेलियाकू। पर उसका कोई जवाब नहीं था। राजा ने सोचा शायद वह सो गयी हो सो वह घर के अन्दर गया, फिर उसके कमरे में गया पर वह कहीं नहीं मिली। उसका कमरा वैसा ही था जैसा पहले रहता था।

ओनूनेलियाकू – राजा एक बार और चिल्लाया पर उसे कोई जवाब नहीं मिला। अबकी बार रानी ने महल के ऑगन की तरफ

भागते हुए पुकारा "इफ़ी, बहुत हो गया। तुम जहॉ भी हो मुझे जवाब दो।"

राजा ने तुरन्त ही अपने सारे नौकरों को बुलाया और उनसे पूछा कि राजकुमारी को क्या हुआ जिसको वह उनकी देखभाल में छोड़ कर गया था।

उनमें से एक नौकर बोला — "हमने उसको नहीं देखा।"

पर राजा ने कहा — "तुमको पता होना चाहिये कि वह कहॉ है और उसको क्या हुआ, क्योंकि मैं तुम लोगों से कह कर गया था कि तुम उसको अपनी ऑखों से एक मिनट के लिये भी ओझल मत होने देना।"

राजा के इस तरह कहने पर एक नौकर ने कहा — "हमने उसको पुराने कपड़े पहने हुए खेतों की तरफ जाते देखा था।"

तुरन्त ही राजा और रानी अपनी बेटी के पीछे भागे। कई गॉव पार करने के बाद उनको वह दिखायी दे गयी।

रानी ने पूछा — "क्या बात है इफ़ी?"

पर इफ़ेयिन्वा कोई भी बात करने के लिये बहुत दुखी थी। रोते रोते उसकी ऑखें लाल थीं। उसने अपने हथेली के पीछे से अपनी ऑखों के ऑसू पोंछे और गाना शुरू किया —

मेरी मॉ ने मुझे पैदा किया, टुमान्वे
और मेरा नाम रखा पैसा खर्च करने वाली, टुमान्वे
मेर पिता ने मुझे पैदा किया, टुमान्वे
और मेरा नाम रखा पैसा खर्च करने वाली, टुमान्वे

मेरे अपने नौकरों ने मुझे देखा, टुमान्वे
और उन्होंने मुझे पुकारा कैलेवाश की बच्ची, टुमान्वे

मैं कैलेवाश की बच्ची हूँ या नहीं, टुमान्वे
मैं अपने घर जा रही हूँ, टुमान्वे
मैं कैलेवाश की बच्ची हूँ या नहीं, टुमान्वे
मैं अपने घर जा रही हूँ, टुमान्वे

राजा और रानी दोनों बहुत दुखी थे। उन्होंने ओनूनेलियाकू से बहुत प्रार्थना की कि वह उनके साथ वापस घर चले।

राजा बोला — "हमारे साथ घर वापस चलो बेटी। मेरे घर के एक नौकर की इतनी हिम्मत कि वह मेरी बेटी को उस नाम से पुकारे जिसको मैंने मना किया है यह नहीं हो सकता।

तुम मेरे साथ चलो और कम से कम चल कर मुझे यह तो बताओ कि वह कौन है जिसने तुमको इस नाम से पुकारा। मैं उसको उसकी करनी का सबक सिखाऊँगा और उसको इज़्ज़त करना सिखाऊँगा, चाहे मैं घर में हूँ या नहीं।"

पर ओनूनेलियाकू तो अपनी जिद पर अड़ी थी कि उसको वहीं वापस जाना है जहाँ से वह आयी थी और इस तरह से उसको बहलाया नहीं जा सकता।

वह बोली — "नौकरों ने मेरा विश्वास तोड़ा है, मेरी इज़्ज़त को बट्टा लगाया है। मुझे नहीं मालूम मैं किस तरह से एक राजा के घर

में रह सकती हूँ। मुझे वहाँ वापस जाने दीजिये जहाँ मैं शान्ति से रह सकूँ और मेरे भेद कोई न जान सके।"

यह देख कर कि उसने अपनी बेटी को हमेशा के लिये खो दिया है राजा बहुत रोया और रोते रोते उसकी आखें लाल हो गयीं।

हम सब जानते हैं कि एक आदमी के लिये रोना कितना मुश्किल होता है। किसी आदमी का रोना उन सबके दिलों में एक बोझ पैदा कर देता है जो उसको रोते हुए देखता है।

और यहाँ तो केवल एक आदमी नहीं बल्कि एक राजा रो रहा था जिसके पास कुछ भी करने की ताकत थी पर फिर भी उसने उस छोटी लड़की को उसकी इच्छा के खिलाफ रोकने की कोशिश नहीं की।

इस बात से ओनूनेलियाकू का दिल पिघल गया। राजा के प्यार का विश्वास देख कर उसने सोचा कि वह उनके साथ घर वापस जायेगी।

उसके इस फैसले से राजा और रानी बहुत खुश हुए और ओनूनेलियाकू को अपने गाँव वापस ले गये। जब वे सब गाँव पहुँचे तो ओनूनेलियाकू ने राजा को बताया कि वह कौन सा नौकर था जिसने उसको उस नाम से बुलाया था।

राजा का गुस्सा फिर से बढ़ गया और इतना बढ़ गया कि उसने अपने सब नौकरों को मरवाने का हुक्म सुना दिया। सारे नौकरों को

मरवाने से राजा को लगा कि शायद वह ओनूनेलियाकू से फिर से इज़्ज़त पा सकेगा।

पर इससे हुआ कुछ और भी। नौकरों को मरवाने से ओनूनेलियाकू के ऊपर पड़ा एक आत्मा का डाला हुआ जादू टूट गया।

उस आत्मा ने उससे कहा था कि "तुम हमेशा कैलेबाश ही बनी रहोगी जब तक कि तुम्हारे लिये किसी आदमी का खून नहीं बहेगा।"

सो जैसे ही वे नौकर मारे गये उसके ऊपर का वह जादू टूट गया और ओनूनेलियाकू अब एक साधारण लड़की बन गयी।

जब राजा और रानी मर गये तो ओनूनेलियाकू गॉव की ऐज़े न्वान्यी[10] बन गयी। उसके लोग उसकी बहुत इज़्ज़त करते थे और वह भी उनके ऊपर दया से राज करती थी जैसे उसके पहले उसके पिता किया करते थे।

यहीं से उस गॉव में स्त्री का राज शुरू हुआ जहॉ पहले केवल आदमी ही राजा हुआ करते थे।

[10] Eze Nwanyi – queen

2 तालाब का रक्षक[11]

यह लोक कथा मध्य अफ्रीका के मध्य अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें एक आदमी को अजगर बना दिया जाता है।

मध्य अफ्रीका देश में बहुत दूर एक जगह पर एक झील थी। उस झील के एक तरफ पानी को निकलने को जगह मिल गयी थी सो वहॉ से वह पानी निकल कर मैदानों की तरफ चल पड़ा था।

तंग पहाड़ी रास्तों से होता हुआ, पहाड़ियों की चोटी से नीचे गिरता हुआ, कत्थई ज़मीन और हरे घास के सपाट मैदानों से होता हुआ वह पानी तीन चट्टानों के बीच में आ कर रुक गया।

वहॉ वह नदी चारों तरफ घूमती रही ताकि वह वहॉ से निकल जाये, गोल गोल और तेज़, पर वह वहॉ से निकल नहीं सकी और वहॉ पर उसका एक भॅवर[12] बन गया जिसमें पानी नीचे की तरफ डूबता चला जाता है।

उस भॅवर में पास में लगे पेड़ों के लाल और सुनहरी पत्ते भी डूबते चले जा रहे थे। और वे डंडियॉ भी डूबती चली जा रही थीं

[11] The Guardian of the Pool – a folktale from Central Africa, Africa.
Adapted from the book: "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Retold by Diana Pitcher in Zululand background

[12] Translated for the word "Whirlpool". Whirlpools are of several kinds. Some are big and strong and swift, while others are are small, weak, and slow. See the picture of a small and slow whirlpool above.

जो पानी के उस पार से पानी में आ गिरी थीं। और वे तितलियॉ भी जो पानी के किनारे लगे सफेद खुशबूदार फूलों पर मॅडराती थीं।

उस भॅवर की तली में एक बहुत बड़ा रुपहले रंग का पानी का अजगर[13] रहता था। वह वहॉ कुंडली मार कर बैठा रहता था।

जब सूरज निकलता तो उस सॉप की ऑखें उसकी चमकीली किरनों को देख कर झपकतीं और उसकी सुन्दर पर भयानक जीभ लपलपाती। वह रुपहला अजगर उस तालाब का रक्षक था।

पर यह कोई मामूली अजगर नहीं था क्योंकि उसकी ठंडी भीगी खाल को केवल छूने से ही लोगों के बहुत सारे रोग और दर्द ठीक हो जाते थे। पर ठीक तो वे ही होते थे न जो उसके घर में, यानी तालाब की तली में, जा कर उसको छू कर आते थे।

एनगोसा[14] उसी तालाब के किनारे बैठी हुई थी और उस तालाब में तेज़ घूमते भॅवरों को देख रही थी। सूरज उसकी कत्थई खाल पर चमक रहा था और उसके कॉपते हुए शरीर को गर्म कर रहा था।

उसकी मॉ बीमार थी, बहुत बीमार। ऐनगोसा जानती थी कि वह अगर उसके लिये कोई सहायता ले कर नहीं गयी तो वह मर जायेगी।

---

[13] Translated for the word “Silver Water Python”

[14] Ngosa – name of an African girl

पर उस भॅवर की उन भयानक लहरों में से हो कर नीचे उतरना, फिर उस रुपहले अजगर को छूना, फिर उसकी काली ऑखों में देखना, और फिर उसकी लपलपाती हुई जीभ ... उफ, धूप की गर्मी से गर्म होते हुए भी ऐनगोसा डर से कॉप गयी। वह बहुत डरी हुई थी। वह क्या करे।

पानी के नीचे से अजगर ने ऐनगोसा की तरफ देखा और देखा कि वह सुन्दर थी। उसने यह भी जान लिया कि वह उससे क्यों डर रही थी सो वह उसको कुछ तसल्ली देना चाहता था पर वह उसको तसल्ली कैसे दे। ऐनगोसा तो उससे बहुत दूर बैठी थी।

तभी ऐनगोसा ने अपने पीछे रोने की आवाज सुनी। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उसकी छोटी बहिन खेतों में से हो कर भागी चली आ रही थी।

उसने पुकारा — "ऐनगोसा, ऐनगोसा। जल्दी कर क्योंकि मॉ की हालत बहुत खराब है और हमारी मॉ अब मरने ही वाली है।"

यह सुन कर ऐनगोसा को अपनी मॉ की बहुत सारी बातें याद आ गयीं – कैसे उसकी मॉ उसको सहलाया करती थी और जब एक बार मगर ने उसको पानी में खींच लिया था तो कैसे वह उसके पास बैठ कर सारी सारी रात उसके लिये लोरियॉ गाया करती थी।

एक बार जब उसको बिच्छू ने काट लिया था तो कैसे वह उसके लिये कई कई मील पैदल जा कर उसके दर्द को ठीक करने के लिये लाल मूली की जड़ ले कर आयी थी।

कैसे उसकी मॉ ने एक बार एक बालों वाले बबून को खूब पीटा था जब उसने उसके छोटे भाई को चुराने की कोशिश की थी।

एक बार जब बहुत सूखा पड़ा था और सारे आदमी भूखे मर रहे थे तब कैसे उसकी मॉ ने अपना मक्का का दलिया छिप कर अपने बच्चों से बॉट कर खाया था।

यही सोचते सोचते ऐनगोसा उठी और उस भॅवर के पास जा कर रुक गयी।

अजगर ने ऐनगोसा के सामने एक बार अपनी जीभ लपलपायी और फिर शान्त हो गया। उसकी काली ऑखें बन्द थीं। ऐनगोसा ने अपना हाथ बढ़ाया और उसकी ठंडी भीगी खाल को छुआ।

फिर पानी को अपनी बॉहों और टॉगों से हटाते हुए वह पानी की सतह के ऊपर आ गयी और खेतों से हो कर अजगर की दवा वाले गुणों से अपनी मॉ को छूने के लिये अपने घर भाग गयी।

उस रात जब लाल रंग का पूनम का चॉद पहाड़ों के ऊपर निकला तो उस अजगर ने अपने रुपहले शरीर की कुंडली खोली और धीरे से पानी की सतह के ऊपर आया। और जमीन पर एक नौजवान ने कदम रखा।

उसका सुन्दर ऊॅचा सिर काले घुॅघराले बालों से ढका हुआ था। उसकी कत्थई ऑखों मे कोई डर नहीं था। उसकी बॉहें और टॉगें बहुत मजबूत थीं। वह तो एक सरदार का बेटा था।

जैसे ही वह बाहर आया उसने अपने आपको देखा और फिर धरती को देखा तो उसने देखा कि धरती कितनी अच्छी थी।

खेतों में से होते हुए वह एक आधे गोलाकार में लगी हुई झोंपड़ियों के पास आ गया। उम झोंपड़ियों के आस पास जानवर चर रहे थे। उनकी काली और सफेद खाल चॉदनी में मुलायम और रेशमी लग रही थी। एक बकरी अपने मेमने के साथ खेल रही थी।

उस नौजवान ने पुकारा — "ऐनगोसा, ऐनगोसा। तुम्हारी हिम्मत ने मुझे बचा लिया। जब पानी वाली जादूगरनी ने मेरे ऊपर अपना जादू डाला था तो मैं उस तालाब की तली में डूब गया था। उसके बाद हमेशा के लिये रोज मुझे उस तालाब का रक्षक ही रहना था।

पर तुम्हारी हिम्मत की वजह से कम से कम अब मैं रात को अपना पुराना आदमी का रूप रख सकता हूॅ। रात को मैं अपने आपको उन लोगों को दिखा सकता हूॅ जो बहादुर हैं और सुन्दर हैं।

तुम यकीनन बहादुर हो जो मुझसे मेरे अजगर के रूप में मिलने आयीं। और मैं देख रहा हूॅ कि तुम सुन्दर भी हो। आओ मेरे पास आओ।"

ऐनगोसा अपनी झोंपड़ी से बाहर निकली तो सरदार का बेटा सफेद, नीले और हरे चॉद पत्थर[15] की माला बन कर उसके गले में जा पड़ा। वे चॉद पत्थर एक चॉदी के तार मे पिरोये हुए थे।

[15] Translated for the word "Moonstone" – Moonstone is a semi-precious srtone

अब ऐनगोसा अपना सारा दिन उस भॅवर के किनारे बैठ कर संगीत बजा कर बिताती है क्योंकि अजगर आदमियों का संगीत सुनना बहुत पसन्द करते हैं।

और रात को वह अपने चॉद पत्थरों की माला को अपने गले में पहन लेती है और सरदार के बेटे का पानी में से निकलने का इन्तजार करती है।

3 सात सिर वाला सॉप[16]

अफ्रीका की इस लोक कथा में एक आदमी को शाप दे कर एक सात सिर वाला सॉप बना दिया जाता है पर यह शाप उसका तभी टूटता है जब उसकी पत्नी सात शादियों में नाचती है। तो पढ़ो शाप की यह अजीबो गरीब कथा जो दक्षिण अफ्रीका की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार दक्षिण अफ्रीका में एक औरत रहती थी जिसका नाम था मंजूज़ा[17]। उसके पास दो हुनर थे। एक तो उसकी आवाज गाने के लिये बहुत अच्छी थी इसलिये लोग उसका गाना सुनना बहुत पसन्द करते थे।

दूसरे मंजूज़ा का नाच भी लोगों का दिल खुश कर देता था। लोग अपने घरों में खास मौकों पर नाचने गाने के लिये उसको बुलाने के लिये दूर और पास सभी जगहों से आते थे।

पर वह शादियों में नाचने के लिये बहुत ज़्यादा मशहूर थी। कोई भी शादी जब तक पूरी नहीं होती थी जब तक नाच के लिये मंजूज़ा न खड़ी हो, और वह भी तब जबकि दुलहिन अपने सबसे

[16] The Seven Headed Snake – a Xhosa folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Retold by Geina Mhlophe

[17] Manjuza – name of the woman

सुन्दर रूप में बाहर आती थी। वह खूब महक रही होती थी और उसका चेहरा सुबह के सूरज की तरह चमकता हुआ होता था।

अगर कोई शादी बिना मंजूज़ा के होती भी तो लोग उस शादी को बहुत जल्दी भूल जाते थे।

गुलेनी गॉव[18] जहॉ मंजूज़ा रहती थी एक बहुत ही सीधे सादे और मेहनती लोगों का गॉव था। हालॉकि वह एक छोटा सा गॉव था फिर भी वह अपने बहादुर शिकारियों के लिये बहुत मशहूर था।

उस गॉव के शिकारियों के समूह का नेता एमथियाने[19] एक बहुत ही इज़्ज़तदार आदमी था और वह तभी बोलता था जब उसे कुछ जरूरी और खास बात कहनी होती थी वरना वह बहुत कम बोलता था।

वह जब जवान था तभी से वह एक बहुत अच्छा शिकारी था और बहुत सी मॉऐं इस उम्मीद में थीं कि वह उनकी बेटी से शादी कर लेगा।

पर जब उसने मंजूज़ा को अपनी पत्नी के लिये चुना तो सभी लोगों ने कहा कि उनकी जोड़ी बहुत अच्छी जोड़ी थी। जैसे जैसे साल बीतते गये उनके तीन बच्चे हुए, दो लड़के और एक लड़की।

जब एमथियाने अपने शिकारी समूह के साथ बाहर रहता, कभी कभी हफ्तों के लिये भी, तो वह तारों भरी रात में आसमान के नीचे

[18] Guleni village

[19] Mthiyane – name of the husband of Manjuza

चुपचाप बैठ जाता और सोचता रहता कि मंजूज़ा बच्चों के साथ क्या कर रही होगी।

उसे बच्चों की शाम के खाना खाने के बाद सोने के समय की धीमी धीमी सॉसें याद आतीं। उनकी मॉ की गायी हुई लोरियॉ याद आतीं।

एक दिन मंजूज़ा घर में अकेली थी। उसका पति दो दिन बाद घर आने वाला था सो वह उसके लिये बीयर[20] बना रही थी। वह चाहती थी कि जब उसका पति घर आये तब तक उसकी बीयर तैयार हो जाये।

जब वह यह काम कर रही थी तो उसने बाहर से किसी के पुकारने की आवाज सुनी। एक बूढ़ी औरत अपनी पोती की शादी पर उसको नाचने के लिये बुलाने के लिये आयी थी।

पर मंजूज़ा को एक परेशानी थी। उसने उसी दिन किसी और की शादी में नाचने के लिये वायदा कर रखा था।

उस बुढ़िया ने अपनी सारी तरकीबें लगायीं कि वह मंजूज़ा को दूसरी शादी में जाने से रोक सके पर वह उसको रोक नहीं सकी। मंजूज़ा ने भी क्योंकि उस दूसरी शादी वाले से आने का वायदा किया था इसलिये वह भी उसे नहीं तोड़ सकती थी।

उधर मंजूज़ा ने बहुत कोशिश की वह बुढ़िया अपनी पोती की शादी की तारीख़ बदल दे ताकि वह दोनों शादियों में नाच सके और

[20] Beer – a light alcoholic drink vey common in the whole Africa

दोनों ही परिवार नाउम्मीद न हों पर उस बुढ़िया ने अपनी पोती की शादी की तारीख बदलने से मना कर दिया और वह मंजूज़ा से बहुत नाराज हो कर चली गयी।

पर वहॉ से जाने से पहले वह मंजूज़ा को धमकी दे गयी कि वह इसके बदले में उसके पति को शाप देगी। कि एमथियाने जब घर आ रहा होगा तो उसके साथ कोई बहुत ही खराब घटना घट जायेगी और वह एक बदसूरत राक्षस[21] बन जायेगा।

जब वह बुढ़िया चली गयी तो मंजूज़ा थकी थकी सी अकेली ही बैठी रह गयी। उसका दिल बहुत दुखी हो गया।

वह एक बहुत ही दयावान औरत थी और बहुत ही खुश हो कर नाचती थी क्योंकि उसको शादी में आये हुए मेहमानों के खुश खुश चेहरे अच्छे लगते थे।

जिस रात को मंजूज़ा का पति आने वाला था उस रात बच्चे बहुत खुश थे। वे रात का खाना खाने के बाद बहुत देर तक बैठे रहे और अपने पिता का इन्तजार करते रहे। देर होती जा रही थी।

वे दरवाजे पर खटखटाने की आवाज का इन्तजार कर रहे थे पर वह आवाज ही नहीं आ रही थी। वे उन कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनने का इन्तजार कर रहे थे जो शिकारियों के समूह के आगे आगे चलते हैं पर सब कुछ शान्त था। कहीं कोई आवाज नहीं थी।

[21] Translated for the word “Monster”

बच्चों को जॅभाइयॉ आने लगी थीं और वे एक एक कर के सोने लगे थे। उनकी मॉ उनके पिता का इन्तजार करती वहीं बैठी रही वह सो ही नहीं पा रही थी।

एमथियाने रात बीत जाने पर सुबह होने के ठीक पहले आया। कैसा अजीब सा दिखायी दे रहा था वह। उसकी ऑखें चमकीली सलेटी हो गयी थीं और उसकी ऑखें एक गुस्से में भरे हुए सॉप की तरह इधर उधर घूम रही थीं।

उसकी जीभ उसके मुॅह से बाहर निकल रही थी और बहुत लम्बी हो गयी थी। वह एक शब्द भी नहीं बोल रहा था बस केवल अजीब अजीब सी आवाजें निकाल रहा था।

मंजूज़ा तो डर के मारे कुछ बोल ही नहीं पा रही थी। उसका मुॅह सूख गया जब उसने देखा कि उसका प्रिय पति उसके सामने सामने एक सात सिर वाले सॉप में बदल गया।

उसको जल्दी ही कुछ सोचना था। मुर्गों ने बोलना शुरू कर दिया था। पूर्व में दिन नारंगी रंग का हो चला था। उसको उस सॉप को बच्चों के जागने से पहले ही कहीं छिपा देना था।

उसने तुरन्त ही एक झोंपड़ी साफ की जो फसल काटने के समय खाना रखने के काम आती थी। उस झोंपड़ी में एक बहुत बड़ा काला बर्तन था जो अनाज रखने के काम आता था।

उसने वह बर्तन खाली कर लिया और उसमें सॉप को घुसा दिया। फिर उसने उस बर्तन के ढक्कन में से एक छोटा सा टुकड़ा तोड़ कर एक छेद किया ताकि वह सॉप उसमें से सॉस ले सके।

इस सबके बाद उसने उस सॉप के सातों सिरों को ठीक से खाना दिया और उस झोंपड़ी का ताला लगा दिया।

सुबह होने पर जब बच्चे उठे तो उन्होंने अपने पिता के बारे में पूछा तो मंजूज़ा ने उनको बता दिया कि उनका पिता अभी तक नहीं आया है पर कुछ दिन में आ जायेगा।

उस रात उसने चुपचाप बच्चों को सुलाया और फिर सॉप को खाना खिलाने चली गयी। सॉप को खाना खिलाने, उस झोंपड़ी को ताला लगाने के बाद वह खुद भी सोने चली गयी और अपने बिस्तर में जा कर रो पड़ी।

उसी रात मंजूज़ा ने एक सपना देखा। उसकी दादी उसको सपने में कह रही थी कि अपने पति को उसके पुराने रूप में लाने के लिये उसको बस इतना करना था कि उसको उस बुढ़िया के शाप का जादू तोड़ना था और ऐसा वह सात शादियों में नाच कर कर सकती थी।

जब वह सातवीं शादी में से लौट कर आयेगी तब वह अपने पति को उसी शरीर में पायेगी जो उसके पास शाप देने के पहले था। पर यह बहुत जरूरी था कि वह इस बात को छिपा कर रखे, किसी को भी न बताये, अपने बच्चों को भी नहीं।

उधर मंजूज़ा के बच्चों की समझ में यह नहीं आ रहा था कि उनका पिता अभी तक आया क्यों नहीं था। उनकी समझ में यह भी नहीं आ रहा था कि जब भी वे अपनी मॉ से यह पूछते कि वह एक झोंपड़ी को ताला लगा कर क्यों रखती है तो उनकी मॉ उनसे गुस्सा क्यों हो जाती है।

वे यह भी नहीं समझ पा रहे थे कि वह हर समय परेशान सी क्यों रहती है। फिर भी मंजूज़ा ने अपना भेद भेद ही रखा और सॉप को खाना खिलाती रही।

उसको इस बात का भी बहुत दुख था कि उसके बच्चे अपने पिता को कितना याद कर रहे थे। कभी कभी वे सोचते थे कि पता नहीं उनका पिता ज़िन्दा भी है या नहीं और उनकी मॉ उनको सच बताने से डरती थी।

पर कभी कभी वे देखते थे कि उनकी मॉ कुछ खाना अलग निकाल कर रख रही है। जब वे उसकी वजह पूछते तो वह जवाब देती कि वह यह खाना उनके पिता के लिये निकाल कर रख रही है कि पता नहीं वह कब घर आ जायें।

बहुत सारे लोग मंजूज़ा को शादी में नाचने के लिये बुलाने आते थे और वह उन सबका बुलावा मान लेती थी क्योंकि उसको अपने पति को अपने पुराने रूप में लाने के लिये सात शादियों मं नाचना ज़रूरी था। जबसे उसने अपनी दादी को सपने में देखा था तबसे वह तीन शादियों में नाच आयी थी।

वह हर शादी गिनती जा रही थी। अब उसके दिमाग में सिवाय शादियों के और कुछ था ही नहीं। हर बार जब भी वह शादी में जाती वह सॉप को खाना खिला कर अपनी झोंपड़ी को ताला लगा कर जाती और झोंपड़ी की चाभी अपने साथ ले जाती।

उसके बच्चे अक्सर उससे उस ताला लगी झोंपड़ी को दिखाने के लिये जिद करते कि उसमें क्या है पर वह मना कर देती। बच्चों ने चाभी चुराने की भी कोशिश की पर मंजूज़ा इस मामले में बहुत सावधान थी। वह हमेशा उस झोंपड़ी का ताला लगा कर चाभी अपने पास ही रखती थी।

शादी में नाच के लिये और भी बुलावे आये और मंजूज़ा उन सब शादियों में नाचने के लिये गयी क्योंकि हर शादी उसको सातवीं शादी के और पास लाती जा रही थी।

जब वह छठी शादी से नाच कर वापस आयी तब वह इतनी खुश थी कि वह अपनी मुस्कुराहट रोक न सकी। उसके चेहरे पर चमक थी और उसकी ऑखें ऐसे चमक रही थीं जैसे किसी जवान लड़की की ऑखें प्यार में चमकती हैं।

बस अब एक शादी और फिर उसका पति अपने पुराने रूप में आ जायेगा। सो जब उसको सातवीं शादी का बुलावा आया तब तो उसकी खुशी का ठिकाना ही न रहा। वह खुद ही गा उठी और ज़ोर ज़ोर से हॅसने लगी।

उसने अपने बच्चों के सवाल भरे चेहरों की तरफ देखा और सोचा कि जल्दी ही वे भी मुस्कुराने लगेंगे।

इससे उसके पड़ोसियों को लगा कि उसको किसी और आदमी से प्यार हो गया है। पर जब उन्होंने उससे उस आदमी के बारे में पूछा तो वह हॅस कर टाल गयी।

सातवीं शादी के दिन मंजूज़ा जल्दी उठी। बच्चों के लिये नाश्ता बनाया और फिर खुद तैयार होने चली गयी। उस दिन वह बहुत सुन्दर दिखायी देना चाहती थी।

इस बीच बच्चे फिर से उस झोंपड़ी की चाभी चुराना चाह रहे थे। उन्होंने चाभी चुराने की कोशिश भी बहुत की पर वह उसे चुरा ही नहीं पा रहे थे।

जब तक मंजूज़ा शादी में गयी तब वह बहुत गुस्सा थी पर फिर भी मंजूज़ा ऐसी नहीं थी कि वह ऐसी चीज़ों में लापरवाही बरते। वह बहुत ही सावधान थी सो जब वह शादी में गयी तो वह चाभी अपने साथ ले गयी।

बच्चे इस बात से बहुत ही नाउम्मीद हुए और जब वे नाश्ता कर रहे थे तो साथ में कुछ कुछ बड़बड़ाते भी जा रहे थे। पर बाद में वे फिर खेलने चले गये।

दोपहर में जब वे खेल रहे थे और एक दूसरे का पीछा कर रहे थे वे उस झोंपड़ी तक आ पहुॅचे जिसमें उनको जाना मना था।

सबसे बड़े बेटे ने दरवाजा खोलने की कोशिश की जैसा कि वह पहले भी कई बार कर चुका था। पर आश्चर्य, इस बार तो वह खुला पड़ा था।

मंजूज़ा हमेशा की तरह चाभी तो अपने साथ तो ले गयी थी पर उस दिन वह उस झोंपड़ी को ताला लगाना भूल गयी थी।

बच्चे उस झोंपड़ी के अन्दर चले गये और सावधानी से इधर उधर देखने लगे। पर वह झोंपड़ी तो खाली थी सिवाय उस बड़े बर्तन के जो तीन टॉगों पर रखा हुआ था और जिसका ढक्कन टूटा हुआ था।

बच्चों ने एक दूसरे की तरफ देखा। उनकी समझ में कुछ नहीं आया कि उनकी मॉ ने इस बर्तन को देखने से उन्हें क्यों मना कर रखा था।

उसके सबसे बड़े बेटे ने यह देखने के लिये कि उस बर्तन में क्या था उस बर्तन का भारी ढक्कन उठाया। एक बहुत बड़े सात सिर वाले सॉप ने उनकी तरफ देखा तो वे डर के मारे चिल्लाते हुए वहॉ से बाहर भाग लिये।

मंजूज़ा का घर नदी के किनारे से बहुत दूर नहीं था सो वह सॉप उस बर्तन में से निकला और नदी के किनारे की तरफ खिसक गया। वहॉ वह सारी दोपहरी धूप में पड़ा रहा और नदी के पानी में अपनी परछाईं देखता रहा।

मंजूज़ा के बच्चे अपने साथियों को उस अजीब सॉप के बारे में बताने के लिये भागे। यह सब सुन कर वे छोटे लड़के लड़कियॉ उस सॉप को ढूँढने भागे।

जब वे उस जगह पहुँचे जहॉ सॉप लेटा हुआ था तो उसको देख कर तो उनका मुँह खुला का खुला रह गया। क्योंकि ऐसा सॉप तो उन्होंने पहले कभी देखा नहीं था। पर वह सात सिर वाला सॉप उनकी तरफ बड़े प्यार से देख रहा था।

उसके एक सिर ने कहा — "ओ गिगीगी[22], वे सब यहीं खड़े हैं।"

उसके दूसरे सिर ने पूछा — "उन्हें क्या चाहिये?"

तीसरा सिर बोला — "वे तो हमें देख रहे हैं बस।"

चौथा सिर बोला — "शायद वे हमारे सिर देखना चाहते हैं।"

पॉचवॉ सिर बोला — वे हमारे पास क्यों नहीं आते?"

छठा सिर बोला — "मुझे लगता कि वे हमारे काटे जाने से डरते हैं।"

सातवॉ सिर बोला — "तो क्या हम उनको वहॉ नहीं काट सकते जहॉ वे खड़े हैं?"

यह सब सुन कर वहॉ खड़े बच्चे वहॉ से जितनी तेज़ी से भाग सकते थे भाग लिये। घर आ कर उन्होंने अपने माता पिता से उस सात सिर वाले सॉप के बारे में बताया।

[22] Gigigi

आदमियों ने अपने अपने डंडे निकाले और उनको ले कर नदी की तरफ चल दिये। जब वे वहॉ पहुँचे तो वे भी वहॉ ऐसे खड़े रह गये जैसे किसी ने उनके ऊपर जादू डाल दिया हो।

उनको तो वहॉ एक ऐसा सॉप दिखायी दिया जैसा कि वे कभी सोच भी नहीं सकते थे – एक सात सिर वाला सॉप। पर जब उस सॉप ने उनसे बात करना शुरू किया तब तो उनकी बोलती ही बन्द हो गयी।

हालॉकि वह यह कहना नहीं चाहते थे कि वे उससे बहुत डरे हुए थे पर वे उससे सचमुच में ही बहुत डरे हुए थे। पर अगर वे यह कह देते तो उनका उनकी पत्नी और बच्चों के सामने अपमान होता।

कुछ लोग कह रहे थे कि सॉप को मारना नहीं चाहिये। उनका कहना था कि शायद उनके पूर्वज उनसे कुछ कहने की कोशिश कर रहे हों। या यह भी हो सकता था कि वे सब लोग घर वापस चले जायें और गॉव की एक मीटिंग में इन सब बातों के ऊपर विचार करें।

स्त्रियों को तो सीधे सीधे यही लग रहा था कि उनके पति अपना डर छिपाने के लिये ही ये सब बहाने बना रहे थे। वे चाहती थीं कि सॉप को सूरज डूबने से पहले ही मार दिया जाये क्योंकि उनको अपने बच्चों की सुरक्षा की बहुत चिन्ता हो रही थी।

आदमियों ने कहा — "हम भी अपने बच्चों की चिन्ता करते हैं पर एक सॉप जो नदी के किनारे बैठा है वह कोई मामूली सॉप नहीं है। ऐसे हम उसको कैसे मार दें?"

पर स्त्रियॉ कोई सफाई नहीं सुनना चाहतीं थीं। वे इकट्ठा हुईं और घरों से उन्होंने अपने अपने दलिये के बर्तन उठाये और मॉओं की एक लम्बी लाइन अपने सिर पर अपने अपने दलियों के बर्तन उठाये हुए नदी की तरफ चलीं।

इस समय तक सॉप बहुत गुस्सा हो गया था और बहुत तेज़ी से बोल रहा था।

पहला सिर बोला — "ओ गिगीगी, देखो अब वे स्त्रियॉ आ रहीं हैं।"

दूसरा सिर बोला — "वे क्या चाहती हैं?"

तीसरा सिर बोला — "वे तो हमारी तरफ ही आ रही हैं।"

चौथा सिर बोला — "और वे बर्तन ...?"

इससे पहले कि वे गुस्से में भरे सिर कुछ और बोलते वे स्त्रियॉ वहॉ आ गयीं और उन्होंने अपने अपने बर्तनों का गर्म गर्म दलिया उस सॉप के सिरों पर उँडेल दिया।

सॉप के सिरों पर बड़े बड़े फफोले पड़ गये और वह दर्द से कराह उठा। और बहुत सारे लोग भी गॉव से वहॉ उस सॉप को मारने में सहायता करने के लिये आ पहुँचे थे।

उन्होंने इस खुशी में कि उन्होंने कई सिरों वाले सॉप को मार दिया है एक गीत भी गाना शुरू कर दिया।

इसी समय मंजूज़ा अपनी सातवीं शादी का नाच पूरा कर के लौट रही थी कि तभी उसने स्त्रियों का वह नया गाना सुना जो वह सॉप मारने के बाद गा रही थीं।

वह गीत सुन कर तो मंजूज़ा बहुत ही डर गयी। गॉव वालों ने तो उसके पति को मार डाला था। उसकी आखों में ऑसू आ गये। अब वह क्या करे।

हालॉकि उसको वह सब सोचने से भी डर लगता था फिर भी उसने निश्चय किया कि वह इस खुशी के गाने और नाचने में उन स्त्रियों का साथ देगी जब तक कि वह इस सबका कोई रास्ता न खोज ले। और क्योंकि रात होने जा रही थी इसलिये लोग उसका ऑसुओं भरा चेहरा भी नहीं देख पायेंगे।

पर जैसे ही वह उन स्त्रियों के पास गाने और नाचने के लिये गयी तो उसने आदमियों के पीछे से देखा। देख कर वह तो आश्चर्य चकित रह गयी।

उसने देखा कि सॉप की फफोलों वाली हरी खाल से उसका पति धीरे धीरे निकल रहा था। उसकी ऑखें आधी बन्द थीं और लगता था कि जैसे वह बहुत लम्बी नींद से सो कर उठ रहा हो।

सबने गाना रोक दिया। हर आदमी मंजूज़ा के पति की इस तरह की वापसी पर हैरान था। एमथियाने ने भीड़ की तरफ देखा और अपनी पत्नी की तरफ आना शुरू किया।

मंजूज़ा को तो अपनी ऑखों पर अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था। वह तुरन्त ही अपने पति की तरफ दौड़ गयी और खुशी से उससे जा कर लिपट गयी। वह खुशी के मारे हॅस भी रही थी और रो भी रही थी।

एमथियाने की भी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि उसके चारों तरफ क्या हो रहा था। फिर उसके बच्चे भी उसके पास आ गये और सारा परिवार आपस में मिल गया।

सूरज डूब गया था, दिन भी खत्म हो गया था और साथ में खत्म हो गया था उस बुढ़िया का शाप भी। मंजूज़ा ने पहले से कहीं और ज़्यादा सुन्दरता से नाचना शुरू कर दिया। सारा गॉव उसकी खुशी में खुशी मना रहा था।

4 बड़ा खरगोश और आत्मा[23]

अफ्रीका के दक्षिण अफ्रीका देश की इस लोक कथा में एक बुढ़िया एक बच्चे को गूँगा होने का शाप दे देती है कि वह बच्चा तब तक गूँगा रहेगा जब तक कोई दूसरा आदमी कोई बहुत बड़ा बेवकूफी का काम नहीं कर देता।

एक बूढ़ी औरत एक सुबह बहुत जल्दी ही एक पास के गॉव से अपने घर लौट रही थी। वहॉ वह एक शादी की दावत में गयी थी।

क्योंकि अभी सुबह बहुत जल्दी थी। अभी पूरा दिन भी नहीं निकला था कुछ अँधेरा सा ही था सो उसको रास्ते में पड़ा टूटा बर्तन दिखायी नहीं दिया और चलते चलते वह उससे टकरा गयी और गिर पड़ी। उसकी टॉग में भी चोट आ गयी।

इससे उसको इतना गुस्सा आ गया कि उसने उस आदमी को गाली देनी शुरू की जिसने वह टूटा बर्तन रास्ते में छोड़ा था — "सत्यानाश हो उस आदमी का जिसने यह टूटा बर्तन इस तरह रास्ते में छोड़ा जहॉ भले लोग चलते हैं।"

---

[23] The Hare and the Spirit – a Xhosa folktale from South Africa, Africa.
Adapted from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Retold by Phyllis Savory . Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com as an e-book free of charge.
[My Note: This story is included in my book "Dakshin Africa Ki Lok Kathayen-2" with the title "Cursed Curse". There it has been taken from the Web Site :
http://www.themuralman.com/south_africa/south_africa_potch_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin]

फिर वह उठी और अपने रास्ते चल दी पर अभी उसको तसल्ली नहीं थी। उसने अपनी गाली देनी जारी रखी — "भगवान करे उसका सबसे बड़ा बच्चा अभी अभी गूँगा हो जाये और वह तब तक गूँगा रहे जब तक कि उसके ऊपर का यह जादू न टूट जाये।

और यह जादू तभी टूटेगा जब कोई दूसरा आदमी भी ऐसा ही बेवकूफी का काम करेगा जैसा इस आदमी ने यह टूटा बर्तन रास्ते पर डाल कर मुझे तंग करने के लिये किया है।"

और यह कहते कहते वह अपने रास्ते पर चलती रही।

पास में ही एक मेहनती आदमी रहता था जिसका नाम था डोंडो। वह अपनी पत्नी और एक सात साल की बच्ची टैम्बे[24] के साथ रहता था।

इन बूढ़े पति पत्नी ने अपनी बच्ची के सुख को पाने के लिये बहुत दिन दुख सहे थे। उनकी ज़िन्दगी में सब कुछ अच्छा था सिवाय इसके कि उनके यह केवल एक ही बच्चा था, और वह थी यह लड़की।

अब ज़रा उन माता पिता के दुखड़े के बारे में सोचो जब उन्होंने अपनी एकलौती बेटी को उस सुबह गूँगा पाया।

उन्होंने आपस में पूछा — "ऐसा कौन हो सकता है जिसने हमारी इस भोली सी बच्ची के ऊपर यह जादू डाला है। इस बेचारी ने किसी का क्या बिगाड़ा हो सकता है।"

[24] Dondo and Tembe – Dondo was the man and Tembe was his daughter

उन्होंने बेचारों ने उसे कई डाक्टरों को दिखाया पर कोई भी उस बच्ची को ठीक नहीं कर सका। साल पर साल निकलते गये। वह लड़की जैसे जैसे बड़ी होती गयी वह बहुत सुन्दर भी होती गयी।

पर साथ में यह भी साफ होता गया कि उसकी शादी के लिये "लोबोला" धन[25], शादी में जो जानवर मिलते हैं, जो उसके इतने अच्छे और सुन्दर होने की वजह से उसके माता पिता को मिलते उसका अब कोई मौका नहीं था।

इस सबसे उसके माता पिता बहुत ही दुखी थे कि उनकी गूँगी बेटी को लिये कौन लोबोला देगा। उनका यह डर सच भी था क्योंकि अब तक यह खबर दूर पास सब जगह फैल चुकी थी कि टैम्बे गूँगी थी और कोई भी उसका हाथ माँगने नहीं आया था।

लेकिन एक नौजवान था एनथू[26] जो उस लड़की की सुन्दरता के पीछे इतना पागल था कि उसने उसकी सहायता करने का निश्चय कर लिया।

उसने सोचा कि अगर मैं कोई अच्छी सी भेंट पेड़ की आत्माओं[27] को दूँगा तो वह जरूर ही इस लड़की पर दया कर के इसके ऊपर पड़ा हुआ जादू तोड़ देंगी जो उसकी जबान पर पड़ा हुआ है।

[25] Lobola are the animals which the bridegroom gives to bride's father to marry his daughter.
[26] Nthu – the name the young man who wanted to marry Tembe
[27] Tree Spirits

सो एनथू ने रात होने का इन्तजार किया ताकि कोई और उसके इरादों के बारे में न जान सके कि वह क्या करने जा रहा है।

रात होने के बाद वह पास में ही उगे हुए एक बड़े से यूफोरबिया[28] के पेड़ के पास गया और वहाँ जा कर उसकी आत्मा से उस लड़की की कहानी कही।

इत्तफाक से एमवूँडला नाम के बड़े खरगोश[29] का घर भी उसी पेड़ की जड़ में था। सो जब एनथू टैम्बे की कहानी उस पेड़ की आत्मा को सुना रहा था तो उस समय वह बड़ा खरगोश अपने घर में सो रहा था।

एनथू के बोलने से उसकी नींद में खलल पड़ा। वह जाग गया और उसने उस लड़की का मामला ध्यान से सुना तो उसने एनथू से कुछ मजा लेने की सोची और साथ में अपना भी भला करने की भी।

उसने अपनी आवाज कुछ भारी की और एनथू की प्रार्थना का जवाब दिया — "तुम जो मुझसे इस समय यह पूछने आये हो इसको पूरा करने के बदले में तुम मुझे क्या दोगे?"

एनथू पेड़ की आत्मा की आवाज सुन कर बहुत खुश हुआ और कुछ रुक कर बोला — "ओ अच्छी आत्मा, माँगो जो माँगना चाहती

[28] Euphorbia tree

[29] Mvundla hare – name of the hare – hare is a large size rabbit. See its picture above – he is sitting under the tree.

हो मैं तुमको खुशी से दूँगा क्योंकि मेरा दिल इस सुन्दर लड़की के लिये बहुत दुखता है।"

खरगोश यह बहाना करते हुए कि वह इस मामले को काफी जरूरी समझ रहा था बोला — "तुम मुझे रोज बहुत सारे ताजा हरे पत्ते और स्वादिष्ट बैरी ला कर दोगे और उनको मेरे कदमों में ला कर यहाँ रखोगे तब मैं तुम्हारी प्रार्थना पर गौर करूँगा।"

सो अगले दिन से एनथू पेड़ की आत्मा के लिये ताजा हरे पत्ते और बैरी लाने लगा और उनको पेड़ की जड़ के पास रखने लगा और वह बड़ा खरगोश भी अब रोज बढ़िया मुफ्त का खाना खाने लगा।

पर एक दिन उस बड़े खरगोश की आत्मा उसे कचोटने लगी क्योंकि वह कोई बुरा खरगोश नहीं था। वह सचमुच ही उस लड़की और नौजवान की सहायता करना चाहता था।

उसने उस बीमार लड़की से जान पहचान करनी चाही और उसके गूँगेपन का इलाज करना चाहा क्योंकि उसको अपनी होशियारी पर पूरा भरोसा था।

सो अगली सुबह वह डोंडो के बाजरे के खेत पर गया जिसे वह बहुत अच्छी तरह जानता था क्योंकि उस खेत पर तो वह पहले भी कई बार चोरी कर चुका था।

वह जब वहॉ पहुँचा तो उसने देखा कि टैम्बे अपने खेत में बाजरे की पौद लगा रही थी। जब उसने टैम्बे से कहा कि क्या वह उसकी कुछ सहायता कर सकता है तो उसने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और अपना काम करती रही।

तभी बड़े खरगोश के दिमाग में एक विचार आया। उसने वहीं पड़े पौद के ढेर से थोड़ी सी बाजरे की पौद उठायी और उसके पीछे पीछे अपनी एक नयी कतार लगाता हुआ चल पड़ा।

पर वह उस पौद को उलटा लगा रहा था यानी उसकी जड़ ऊपर रख रहा था और उसके पत्ते नीचे जमीन में गाड़ रहा था। उसको लगा कि अगर वह ऐसा करेगा तो शायद वह उसकी तरफ देखेगी।

जब टैम्बे अपनी लगायी हुई कतार के आखीर में पहुँची तो वह अपनी कमर सीधी करने के लिये खड़ी हुई और नयी कतार बोने के लिये घूमी तब उसने देखा कि उस बड़े खरगोश ने क्या किया था।

उसने उसको घूँसा दिखाया और चिल्लायी — "अरे ओ बेवकूफ, यह तुम क्या कर रहे हो?"

यह बोलते ही टैम्बे को लगा कि उसकी तो आवाज लौट आयी थी। यह देख कर उसके चेहरे पर आश्चर्य की लहर दौड़ गयी। उसने अपना खोदने वाला औजार तो वहीं छोड़ा और वह हॅसती हुई और चिल्लाती हुई अपने माता पिता को ढूँढने भागी।

बड़ा खरगोश बोला — "सो दूसरे आदमियों की तरह इसने भी मुझे कोई धन्यवाद नहीं दिया कि मैंने उसको ठीक कर दिया? पर एनथू बेचारा भी मुझे कब तक मुफ्त खाना देता रहता?"

5 सॉप सरदार[30]

यह लोक कथा अफ्रीका के दक्षिण अफ्रीका देश के जूलू लोगों में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं में से एक है। इस लोक कथा में कबीले के एक सरदार के बेटे को शाप से एक सॉप में बदल दिया जाता है। यह शाप तभी हट पाता है जब उससे कोई शादी कर ले। अब सॉप से शादी कौन करे?

नैन्डी[31] एक बहुत ही गरीब औरत थी। उसका पति मर गया था और उसके कोई लड़का भी नहीं था जो जानवरों को चराने ले जा सकता। उसके केवल एक लड़की थी जो उसकी उसके खेतों के काम में सहायता करती थी।

गर्मियों में जब अमाडुम्बे[32] के पेड़ कपासी रंग के फूलों से भर जाते तो वह और उसकी बेटी उन पेड़ों की जड़ें खोद कर कुछ अमाडुम्बे निकाल लेतीं और उनको अपने मक्का के दलिये के साथ खा लेती थीं।

[30] The Snake Chief – a Nama folktale from Zululand, South Africa, Africa.
Adapted from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Retold by Diana Pitcher.

[31] Nandi – name of the mother

[32] Amadumbe – a kind of tree whose tubers are eaten. It is a kind of coco yam – see the picture of its tubers above.

पर पतझड़ के दिनों में जब अमाडुम्बे के कपासी रंग के फूल मर जाते थे तब वह अपने पड़ोसियों से उमडोनी बैरी[33] के बदले में बकरे के सूखे मॉस या खूब गाढ़े मखनी खट्टे दूध[34] के कैलेबाश[35] खरीद लेती थी। ये उमडोनी बैरियॉ जामुनी रंग की होती थीं और बहुत ही मीठी होती थीं।

गर्मी में एक दिन नैन्डी वे जामुनी बैरी इकट्ठा करने के लिये नदी की तरफ गयी पर उस दिन उसको वहॉ कुछ भी नहीं मिला। जब उसको वहॉ एक बैरी भी नहीं मिली तो वह घर खाली हाथ ही वापस लौटने लगी।

तभी उसने किसी सॉप की बड़ी तेज़ फुँकार सुनी। उसने ऊपर देखा तो वहॉ एक मटमैले हरे रंग का सॉप पेड़ के गहरे लाल रंग के तने से लिपटा हुआ था।

उसका सिर पेड़ की शाखाओं में इधर उधर हिल रहा था और वह उस पेड़ पर लगी जामुनी बैरियॉ खा रहा था।

---

[33] Berries is a generic word for a kind of small sized fruit which grows on bushes. Some examples of berries are blackberry, blueberry, cranberry, raspberry etc. See the picture of Umdoni berries.

[34] Thick creamy sour milk

[35] Calabash - dried outer cover of pumpkin type of fruit. It is like a clay pitcher and is used to keep dry and wet things. See its picture above.

नैन्डी बोली — "तो वह तुम हो जो मेरी बैरियॉ चुरा रहे हो। अगर तुम मेरी सारी बैरियॉ ले लोगे तो फिर मैं फिर मॉस खरीदने के लिये उसके बदले में क्या दूँगी?"

सॉप ने फिर एक फुँकार मारी और उस पेड़ से नीचे उतरना शुरू किया। यह देख कर नैन्डी डर गयी मगर अगर वह डर कर वहॉ से भाग जाती तो समझो फिर उसके लिये कोई बैरी नहीं थी सो वह हिम्मत कर के वहीं खड़ी रही।

सॉप ने फुँकार मारते हुए कहा — "अगर मैं ये उमडोनी बैरी तुमको दे दूँ तो तुम मुझे इन बैरियों के बदले में क्या दोगी? अगर मैं इन उमडोनी बैरियों से तुम्हारी टोकरी भर दूँ तो क्या तुम मुझे अपनी बेटी दोगी?"

नैन्डी जल्दी से बिना कुछ सोचे समझे बोली — "हॉ मैं आज रात को ही अपनी बेटी तुम्हें दे दूँगी बस तुम मुझे मेरी टोकरी इन जामुनी बैरियों से भर लेने दो।"

जब उसकी टोकरी उन फलों से भर गयी तो वह तुरन्त ही अपने घर को चल दी। जो कुछ भी उसने उस सॉप को देने का वायदा किया था वह उससे बहुत डर गयी थी। वह एक ऐसे भद्दे जानवर को अपनी बेटी कैसे दे सकती थी?

घर लौटते समय उसने सोचा कि उसको इस बात का बहुत ध्यान रखना चाहिये कि सॉप को यह पता न चले कि उसका घर कहॉ है।

ऐसा न हो कि वह सॉप उसको घर जाते हुए देख रहा हो और वह उसका पीछा करते करते उसके घर तक पहुँच जाये इसलिये उसको सीधे अपने घर नहीं जाना चाहिये।

इसलिये उसने नदी उस जगह से पार की जहॉ से पत्थरों के ऊपर से पानी उथला था। वहॉ से हो कर वह कॉटों वाली झाड़ियों से हो कर नदी के उस पार जंगल में चली गयी।

लेकिन उसको पता ही नहीं चला कि कब एक कॉटे में उलझ कर उसका चमड़े का स्कर्ट फट गया था और उसका एक छोटा सा टुकड़ा उस पेड़ में फॅसा रह गया।

वह सरकंडे[36] के जंगल में से बड़ी चुपचाप और सॅभाल कर निकली। फिर वह गहरे तालाब में से मगर को देखती हुई भी आयी पर उसको यह ही पता नहीं चला कि कब उसकी एक जामुनी बैरी तालाब में गिर गयी और पानी में तैर गयी।

फिर वह एक तरफ को बने चींटियों के एक बड़े से घर की तरफ गयी और उसके पीछे जा कर छिप गयी। अब वहॉ उसको उमडोनी के पेड़ों से कोई भी नहीं देख सकता था।

[36] Translated for the word “Reed”. See its picture above.

पर फिर उसका पैर एक पानी के चूहे[37] के बिल के छेद में उलझ गया और उसको फिर पता नहीं चला कि कब उसकी पायल[38] के तीन मोती वहाँ की मुलायम जमीन में गिर गये।

आखिर वह अपने घर आयी और अपनी बेटी से बोली — "बेटी मैंने आज एक बहुत ही बुरा काम कर दिया है। मैंने तुझको इस टोकरी भर फल के बदले में एक साँप को देने का वायदा कर दिया है।" और यह कहते कहते वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी।

इस बीच में वह साँप पेड़ पर से उतर आया था और नैन्डी का पीछा कर रहा था। उसका सिर इधर से उधर घूम कर नैन्डी को ढूँढ रहा था कि उसको चमड़े की स्कर्ट का एक टुकड़ा एक काँटे में फँसा दिखायी दे गया। बस उसको पता चल गया कि उसको किधर जाना है।

उसने फिर इधर उधर देखा तो उसको एक पकी हुई जामुनी बैरी पानी पर तैरती हुई दिखायी दे गयी। उससे उसको फिर पता चल गया कि उसको किधर जाना है।

उसने अपना सिर एक बार फिर इधर उधर घुमाया तो उसको पानी के चूहे के बिल के मुँह के पास उस स्त्री की पायल के तीन मोती मिले और वह जान गया कि अब उसे किधर जाना है।

---

[37] Water Rat

[38] Anklet is an ornament to be worn in feet – see its picture above.

जैसे ही नैन्डी ने घर में रोना शुरू किया वैसे ही उसने अपने घर के दरवाजे पर सॉप की फुँकार की बड़े ज़ोर की आवाज सुनी और सॉप को अन्दर आते देखा। वह वहॉ आ कर कुंडली मार कर बैठ गया।

नैन्डी चिल्लायी — "नहीं, नहीं। मेरे उस वायदे का कोई मतलब नहीं था। मैं तुमको अपनी बेटी नहीं दे सकती।"

नैन्डी की बेटी ने ऊपर देखा। उसकी गहरी भूरी ऑखें बहुत ही नम्र और निडर थीं। वह बोली — "मॉ, वायदा तो वायदा होता है। अगर तुमने इस सॉप को मुझे देने का वायदा किया है तो तुमको मुझे इस सॉप को दे देना चाहिये।"

कह कर उसने अपना हाथ बढ़ाया और सॉप का मटमैले हरे रंग का सिर सहलाया और बोली — "आओ, मैं तुम्हारे लिये कुछ खाने का इन्तजाम करती हूँ।"

उसने गाढ़े मखनी खट्टे दूध का एक कैलेबाश उठाया और सॉप को उसे पीने को दिया। फिर उसने अपना कम्बल तह किया और अपने सॉप स्वामी के सोने के लिये बिछौना तैयार किया।

रात में नैन्डी कुलमुलायी। पर उसे किसने जगाया? क्या कोई चीता[39] खॉसा? या फिर हयीना[40] ने चॉद के लिये गाना गाया?

[39] Translated for the word "Leopard".

[40] Hyena – a tiger like animal. See its picture above.

कुछ तो था जिससे उसकी ऑख खुल गयी थी।

उसने फिर से सुनने की कोशिश की। तो ये तो आवाजें थीं, आदमियों की आवाजें। उन आवाजों में से एक आवाज तो उसकी अपनी बेटी की ही थी पर यह दूसरी आवाज किसकी थी और उसकी बेटी किससे बात कर रही थी? यह दूसरी आवाज कुछ गहरी और मजबूत सी थी। कौन हो सकता है यह?

उससे रहा नहीं गया। वह अपनी खाल के कम्बल में से बाहर निकली और अपनी बेटी के कमरे की तरफ चल दी।

वहॉ जा कर उसने क्या देखा? वह अभी भी सो रही थी या सपना देख रही थी? उसकी बेटी के साथ एक बहुत ही सुन्दर नौजवान बैठा हुआ था। वह लम्बा था, सॉवला था और मजबूत था। वह जरूर ही किसी सरदार का बेटा रहा होगा या फिर वह खुद भी सरदार हो सकता था।

और उसकी बेटी वहीं उसके पास में बैठी रंग बिरंगे मोतियों का एक इस तरह का हार बना रही थी जो शादी में इस्तेमाल होता है। और वह नौजवान उससे बहुत प्यार से बातें कर रहा था।

नैन्डी ने फिर उस कम्बल की तरफ देखा जो उसकी बेटी ने सॉप के बिछौना बनाने के लिये तह किया था। उस कम्बल पर एक लम्बी सी मटमैले हरे रंग की सॉप की खाल पड़ी हुई थी।

उससे फिर रहा नहीं गया। उसने तुरन्त ही वह खाल वहॉ से उठा ली और उसको आग में फेंक दिया जो तभी भी थोड़ी थोड़ी जल रही थी। वह खाल तुरन्त ही आग में जल कर राख हो गयी।

सॉप सरदार बोला — "अब मेरा यह जादू टूट गया क्योंकि एक बहुत ही अच्छी लड़की ने मेरे ऊपर दया कर के मुझसे शादी कर ली और एक बेवकूफ औरत ने मेरी यह खाल जला दी।"

अपने इन कठोर शब्दों के बावजूद वह सॉप सरदार नैन्डी की तरफ देख कर मुस्कुरा दिया।

नैन्डी के अब तीन धेवते धेवतियॉ हैं – एक धेवता जानवर चराने के लिये और दो धेवतियॉ उसके खेतों में सहायता करने के लिये और अमाडुम्बे खोदने के लिये।

अब उसको उमडोनी बैरियॉ तोड़ने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि अब सबके लिये घर में बहुत खाना है।

6 मेंढकी राजकुमारी[41]

शाप की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के रूस देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस कथा में एक राजकुमार को एक मेंढकी से शादी करनी पड़ती है। पर वह तो मेंढकी नहीं है। तो फिर वह क्या है। चलो देखते हैं कि उस राजकुमार का उस मेंढकी से शादी करने के बाद क्या हुआ।

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि एक बार रूस में एक राजा और रानी रहते थे। उनके तीन बेटे थे।

जब वे राजकुमार बड़े हो गये तो राजा ने उनको बुलाया और बोला — "मेरे प्यारे बेटों, अब तुम्हारी शादी का समय आ गया है। तुम लोग ऐसा करो कि अपने अपने तीर कमान लो और उससे अपना अपना तीर फेंको। जो लड़की तुम्हारा तीर वापस ले कर आयेगी वही तुम्हारी दुलहिन होगी।"

तीनों राजकुमारों ने पिता को सिर झुकाया, अपना अपना तीर कमान उठाया, तीर कमान पर चढ़ाया और कमान की डोरी खींच कर तीर चला दिया।

---

[41] The Frog Princess – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book :
"Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.
[A similar story is told in India too in which the prince's arrow is caught by a female monkey, instead of a female frog, and he has to marry her. His father also tests his daughters-in-law in the same way and in the last the female monkey becomes free from the curse and changes into a beautiful princess. Read this story "Bandariya Dulhaniyan" in "Mere Bachpan Ki Kahaniyan" by Sushma Gupta in Hindi language.]

सबसे बड़े बेटे का तीर एक कुलीन आदमी के बागीचे में जा कर गिरा जहॉ से उसकी बेटी उसका तीर वापस ले कर आ गयी।

दूसरे बेटे का तीर एक व्यापारी के बागीचे में जा कर गिरा जहॉ से उसकी बेटी उसका तीर वापस ले कर आ गयी।

और तीसरे और सबसे छोटे बेटे का तीर? वह कहॉ गिरा और उसे कौन ले कर आया?

उसके तीसरे सबसे छोटे बेटे राजकुमार इवान[42] ने जो अपना तीर चलाया तो वह इतना ऊॅचा गया कि उसको तो वह दिखायी ही नहीं पड़ा।

वह बेचारा आधे दिन तक अपना तीर ढूॅढता रहा तब कहीं जा कर उसको वह तीर जंगल के एक तालाब में मिला।

एक मेंढकी जो पानी में उगी हुई लिली के एक फूल पर बैठी हुई थी उसने उसको अपने मुॅह में पकड़ा हुआ था।

जब राजकुमार इवान ने उस मेंढकी से अपना तीर वापस मॉगा तो वह बोली — "मैं तुम्हारा तीर तभी वापस करूॅगी जब तुम मुझे अपनी दुलहिन बनाओगे।"

राजकुमार इवान कुछ नफरत के साथ बोला — "पर एक राजकुमार एक मेंढकी से शादी कैसे कर सकता है?"

[42] Prince Ivan – name of the third and the youngest Prince

राजकुमार अपने तीर को एक मेंढकी के मुँह में देख कर बहुत गुस्सा था पर वह अपने पिता की बात नहीं टाल सकता था इसलिये उसने उस मेंढकी को उठाया और उसको अपने महल ले गया।

जब उसने राजा को अपनी कहानी सुनायी और उसको मेंढकी दिखायी तो राजा ने कहा — "मेरे बेटे, अगर तुम्हारी किस्मत में एक मेंढकी से ही शादी करना लिखा है तो यही सही।"

सो उस रविवार को तीन शादियाँ हुईं – बड़े बेटे की शादी एक कुलीन आदमी की बेटी से हुई, बीच वाले बेटे की शादी एक व्यापारी की बेटी से हुई और तीसरे सबसे छोटे बेटे इवान की शादी एक मेंढकी से हुई।

कुछ समय बीत गया तो राजा ने अपने तीनों बेटों को फिर बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बेटो, मैं यह देखना चाहता हूँ कि मेरे किस बेटे की पत्नी मेरे लिये सबसे अच्छी कमीज बना सकती है?"

तीनों बेटों ने पिता को सिर झुकाया और अपने अपने घर चले गये। दोनों बड़े बेटों को तो कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि वे जानते थे कि उनकी पत्नियाँ को सिलाई आती थी पर सबसे छोटा वाला बेटा दुखी मन से अपने घर आया।

उसको दुखी देख कर मेंढकी कूदती हुई उसके पास आयी और टर्रायी — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

इवान बोला — "आज तो मुझे नीचा देखना पड़ेगा। राजा ने कहा है कि तुम उनके लिये सुबह तक एक कमीज सिल दो।"

मेंढकी बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम खाना खाओ और सोओ। सुबह तो शाम से हमेशा ही ज़्यादा ही खूबसूरत होती है।"

राजकुमार खाना खा कर सो गया। जैसे ही राजकुमार सो गया मेंढकी दरवाजे से बाहर कूद कर चबूतरे पर निकल गयी। उसने अपनी मेंढकी की खाल उतार दी। वह अब एक इतनी सुन्दर राजकुमारी बन गयी थी कि उसके बराबर की सुन्दर राजकुमारी मिलना मुश्किल था। उसने ताली बजायी और बोली —

ओ नौकरानियों मेरी पुकार सुनो, एक कमीज सिलो जैसी मेरे पिता पहनते थे

बस रात भर में कमीज तैयार थी। सुबह जब राजकुमार इवान जागा तो वह मेंढकी मेज पर बैठी थी। उसके हाथ में एक कढ़े हुए कपड़े में लिपटी एक कमीज थी।

राजकुमार तो उसको देख कर बहुत खुश हो गया। उसको ले कर वह तुरन्त ही राजा के पास गया। राजा उस समय अपने बड़े बेटों की लायी हुई कमीजें देख रहा था।

उसके पहले बेटे ने उसके सामने अपनी लायी कमीज फैला कर दिखायी। राजा ने उस कमीज को उठाया और बोला — "यह कमीज तो एक किसान के पहनने लायक भी नहीं है।"

फिर उसके दूसरे बेटे ने अपनी लायी हुई कमीज राजा के सामने फैलायी तो राजा उसको देख कर नाक भौं सिकोड़ कर बोला — "अरे, इस कमीज को तो कोई बर्तन बनाने वाला भी नहीं पहनेगा।"

अब इवान की बारी आयी तो उसने भी अपनी लायी कमीज राजा के सामने फैलायी। उसकी कमीज तो बहुत ही सुन्दर सोने और चॉदी के तारों से कढ़ी हुई थी। उसको देखते ही राजा का दिल खुश हो गया और उसकी ऑखों में चमक आ गयी।

वह बोला — "हॉ यह कमीज है राजा के पहनने के लायक।"

कमीजें दिखा कर तीनों राजकुमार अपने अपने घर चले गये। दोनों बड़े वाले बेटे बुड़बुड़ाते चले जा रहे थे — "हम लोग इवान की पत्नी की बेकार में ही हॅसी उड़ा रहे थे। लगता है कि वह जरूर ही कोई जादूगरनी है।"

फिर कुछ समय और बीत गया। राजा ने अपने तीनों बेटों को एक बार फिर बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बेटों, तुम्हारी पत्नियों

को अबकी बार मेरे लिये सुबह तक एक डबल रोटी बनानी है। देखते हैं कि तीनों में से सबसे अच्छा खाना कौन बनाता है।"

इस बार फिर राजकुमार इवान फिर महल से बहुत दुखी हो कर चला। जब वह अपने घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने पूछा — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

उसने उसको राजा का हुक्म सुनाया तो वह बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम खाना खाओ और सोओ। सुबह तो शाम से हमेशा ही ज़्यादा खूबसूरत होती है।"

इस बीच दोनों बड़े बेटों ने शाही रसोईघर से एक बुढ़िया को बुलवा भेजा और यह देखने के लिये उसको इवान के घर भेजा कि देख कर आओ कि वह मेंढकी खाना कैसे बनाती है।

पर मेंढकी ने भी यह भॉप लिया कि उन दोनों के मन में क्या था। उसने थोड़ा सा आटा बनाया, उसको बेला और सीधे आग में डाल दिया।

वह बुढ़िया यह खबर देखने के लिये जल्दी से सीधी उन दोनों भाइयों के पास आयी तो उन दोनों भाइयों की पत्नियों ने भी ऐसा ही किया जैसा मेंढकी ने किया था।

पर जैसे ही वह बुढ़िया वहॉ से चली गयी मेंढकी कूद कर दरवाजे के बाहर चबूतरे पर गयी और अपनी मेंढकी की खाल

उतार दी। वह अब एक इतनी सुन्दर राजकुमारी बन गयी थी कि उसके बराबर की सुन्दर राजकुमारी मिलना मुश्किल था।

उसने फिर ताली बजायी और बोली —

ओ नौकरानियों इतनी मीठी डबल रोटी बनाओ, जैसी मेरे पिता खाते थे

अगली सुबह जब राजकुमार इवान जागा तो एक सफ़ेद कपड़े में लिपटी हुई एक करारी सी डबल रोटी देख कर बहुत खुश हो गया। वह उसको अपने पिता के पास ले गया। वहाँ उसका पिता उसके भाइयों की लायी डबल रोटियाँ देख रहा था।

सबसे पहले उसने अपने सबसे बड़े बेटे के घर की बनी हुई डबल रोटी देखी। उसकी डबल रोटी चूल्हे की आग से बिल्कुल काली हो गयी थी और उसमें गुठलियाँ पड़ गयी थीं। उसने गुस्सा हो कर वह डबल रोटी रसोईघर में भेज दी।

फिर उसने अपने दूसरे बेटे की डबल रोटी देखी तो वह भी आग से जल कर काली हो गयी थी और उसमें भी गुठलियाँ पड़ गयी थीं। वह डबल रोटी भी उसने रसोईघर में भिजवा दी।

पर जब इवान ने अपनी डबल रोटी राजा को दी तो राजा उसको देख कर बहुत खुश हो गया और उसके मुँह से निकला — "यह है डबल रोटी जो शाही खाने की मेज की शान बढ़ायेगी।"

राजा ने उसी दिन शाम को एक दावत का इन्तजाम किया और अपने तीनों बेटों से उस दावत में अपनी अपनी पत्नियों को लाने के

लिये कहा। वह देखना चाहता था कि उसकी तीनों बहुओं में से कौन सी बहू सबसे अच्छा नाचती थी।

एक बार फिर इवान महल से बहुत दुखी हो कर चला। वह सोचता जा रहा था कि आज तो वह गया। वह मेंढकी बेचारी कैसे नाचेगी।

जब वह अपने घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने पूछा — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

उसने उसको राजा का हुक्म सुना दिया तो वह बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम दुखी न हो राजकुमार इवान। तुम शाम को ऐसा करना कि तुम अकेले ही दावत में जाना। मैं तुम्हारे जाने के बाद में आऊँगी।

जब तुम्हें बिजली की कड़क की आवाज सुनायी दे तो अपने मेहमानों से कहना कि तुम्हारी पत्नी अपनी गाड़ी में आ रही है।"

सो राजकुमार इवान उस दावत में अकेले ही चला गया जबकि उसके दोनों भाई अपनी अपनी पत्नियों के साथ आये थे। उनकी पत्नियों ने अपने सबसे अच्छे कपड़े और गहने पहन रखे थे।

राजा और रानी, उनके बेटे और उनकी पत्नियाँ और सब कुलीन मेहमान खाना खाने बैठे ही थे कि अचानक बाहर बिजली कड़की और सारा महल हिल गया। सब लोग घबरा गये।

इवान ने सब लोगों को शान्त किया — "घबराओ नहीं ओ भले लोगों। यह मेरी पत्नी है जो अपनी गाड़ी में आ रही है।"

तभी उसकी पत्नी अन्दर आयी। वह एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी थी। वह नीले रंग का गाउन पहने थी जिस पर चॉदी के सितारे जड़े हुए थे और उसके सुनहरे बालों में आधा चॉद सजा हुआ था।

उसकी सुन्दरता को शब्दों में बखान नहीं किया जा सकता। राजकुमार इवान उसको देख कर बहुत खुश हो गया और वहॉ बैठे मेहमान भी उसको और उसके बढ़िया कपड़ों और गहनों के ही देखे जा रहे थे।

लोगों ने खाना खाना शुरू किया तो बड़े भाइयों की पत्नियों ने देखा कि मेंढकी राजकुमारी ने भुने हुए हंस[43] की हड्डियॉ अपनी दॉयी आस्तीन में छिपा लीं और बची हुई शराब उसने बॉयी आस्तीन में छिपा ली। वे उसको देखती रहीं – हड्डियॉ एक आस्तीन में और शराब की कुछ बूँदें दूसरी आस्तीन में।

जब खाना खत्म हो गया तो राजा ने नाच शुरू करने का हुक्म दिया। मेंढकी राजकुमारी ने नाचना शुरू किया। वह घूम घूम कर नाचती रही और मेहमान लोग पीछे हट कर उसका नाच देखते रहे।

[43] Translated for the word "Swan".

जब उसने अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से एक चमकती हुई झील निकल पड़ी और जब उसने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से कई हंस निकल कर उस झील में तैरने लगे।

यह देख कर वहॉ बैठे सारे कुलीन मेहमानों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसके बाद दोनों बड़े भाइयों की पत्नियों ने नाचना शुरू किया। जब उन्होंने अपना एक हाथ हिलाया तो उनकी भीगी हुई आस्तीन राजा के लाल चेहरे पर जा कर लगीं और जब दूसरा हाथ हिलाया तो दूसरी आस्तीन से हड्डियॉ निकल कर राजा की ऑख में जा पड़ीं।

यह देख कर राजा बहुत नाराज हुआ और नाच छोड़ कर चला गया। पर इस बीच राजकुमार इवान यह देख कर बहुत खुश हुआ कि उसकी पत्नी एक बहुत ही अक्लमन्द और सुन्दर राजकुमारी थी।

पर उसको डर भी लगा कि उसकी पत्नी कहीं फिर से मेंढकी में न बदल जाये सो वह महल से चुपचाप खिसक लिया और घर चला गया। वहॉ उसने उसकी मेंढक वाली खाल उठा कर आग में डाल दी।

जब उसकी पत्नी वापस आयी तो उसको घर में अपनी खाल नहीं मिली तो वह रो पड़ी और बोली — "ओह राजकुमार इवान, यह तुमने क्या किया?

अगर तुमने केवल तीन दिन और इन्तजार किया होता तो हम लोग हमेशा के लिये खुशी खुशी रह रहे होते। अब हमको अलग होना पड़ेगा।

और अगर तुम मुझे ढूँढना भी चाहोगे तो तुमको "एक बीसी और नौ"[44] जमीन के भी आगे "भयानक पुरानी हड्डियों के राज्य"[45] में से हो कर जाना पड़ेगा।" यह कह कर वह एक भूरे रंग की कोयल में बदल गयी और खिड़की से बाहर उड़ गयी।

एक साल गुजर गया और राजकुमार इवान अपनी पत्नी को ढूँढता रहा। जब दूसरा साल शुरू हुआ तो उसने अपने पिता से आशीर्वाद लिया और अपनी पत्नी को ढूँढने चल दिया।

यह तो पता नहीं कि इवान ऊपर चला या नीचे चला, दूर चला या पास चला क्योंकि मैंने सुना नहीं, बहुत समय तक चला या थोड़ी देर तक चला क्योंकि मैं इस बात का अन्दाजा भी नहीं लगा सका।

पर मुझे इतना पता है कि अपनी पत्नी को ढूँढते ढूँढते उसके जूते बहुत जल्दी ही टूट गये, उसके कपड़े फट गये और उसका चेहरा बहुत दुबला हो गया और पीला पड़ गया।

एक दिन जब उसने अपनी सारी उम्मीदें छोड़ दी थीं और वह जंगल के एक खुले हिस्से में घूम

[44] Translated for thr words "One Score and Nine"

[45] Translated for the words "Realm of Old Bones the Dread"

रहा था तो वहॉ उसको एक झोंपड़ी दिखायी दी जो मुर्गी की टॉगों पर खड़ी थी और बराबर घूमे जा रही थी।

इवान बोला — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। मेहरबानी कर के अपनी पीछे वाला हिस्सा तुम पेड़ों की तरफ कर लो और अपना सामने का हिस्सा मेरी तरफ कर लो।"

तुरन्त ही वह झोंपड़ी रुक गयी और उसमें अन्दर जाने के लिये एक दरवाजा खुल गया। इवान उस दरवाजे में से उस झोंपड़ी में घुसा। जैसे ही उसने उस झोंपड़ी के अन्दर पैर रखा तो उसको वहॉ एक बुढ़िया दिखायी दी।

उस बुढ़िया ने इवान से पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

इवान ने उसको अपनी सारी कहानी सुनाते हुए जवाब दिया — "दादी मॉ, मैं अपनी मेंढकी राजकुमारी को ढूँढ रहा हूँ।"

बाबा यागा ने अपना सिर ना में हिलाया और एक लम्बी सी सॉस ले कर बोली — "ओह राजकुमार इवान, तुमने उस मेंढकी की खाल जलायी ही क्यों? क्योंकि वह मेंढकी "अक्लमन्द येलेना"[46] ही तो तुम्हारी मेंढकी पत्नी थी।

वह अपने ताकतवर पिता से भी बढ़ कर अक्लमन्द थी इसी लिये उसका पिता उससे इतना नाराज था कि उसने उसको उसकी

[46] Yelena – Yelena is a fairy in fairy tales of Ruasia. She is mentioned in "Firebird" story published in "Roos Ki Lok Kathayen-2" by Sushma Gupta in Hindi language.

चौदहवीं सालगिरह पर तीन साल के लिये मेंढकी में बदल दिया था।"

राजकुमार इवान दुखी हो कर बोला — "लेकिन अभी मैं क्या करूँ दादी माँ, मैं उसको ढूँढने के लिये कुछ भी करूँगा।"

बाबा यागा आगे बोली — "अभी उसको भयानक पुरानी हड्डियों[47] ने अपने कब्जे में ले रखा है और वहाँ से उसको छुड़ाना आसान नहीं है क्योंकि आज तक उसको कोई मार नहीं सका है।

उसकी आत्मा एक सुई की नोक में है। वह सुई एक अंडे में है। वह अंडा एक बतख में है। वह बतख एक खरगोश में है। और वह खरगोश पत्थर के एक बक्से में है।

वह बक्सा एक ऊँचे से ओक के पेड़[48] के सबसे ऊपर रखा हुआ है और वह पुरानी हड्डी उसकी अपनी जान से भी ज़्यादा अच्छी तरह से रखवाली करता है।"

वह बूढ़ी जादूगरनी आगे बोली — "लो यह धागे का एक गोला ले जाओ। इसको तुम अपने सामने फेंक देना। फिर यह जिधर भी जाये तुम इसके पीछे पीछे चले जाना। यह तुमको रास्ता दिखायेगा।"

[47] Translated for the words "Old Bones" – name of the giant who had captured the frog princess
[48] Oak tree is a very large shady tree.

बाबा यागा को उसकी सहायता के लिये धन्यवाद दे कर इवान ने धागे का वह गोला अपने सामने फेंक दिया और जंगल में उसके पीछे पीछे चलने लगा।

इवान चलता गया चलता गया और एक साफ खाली जगह आ निकला। वहाँ उसको एक बड़ा कत्थई रंग का भालू मिल गया।

वह उस भालू के ऊपर तीर चलाने ही वाला था कि वह भालू उससे आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार को उस भालू पर दया आ गयी। उसने उसको छोड़ दिया और आगे बढ़ गया। आगे जा कर उसको अपने ऊपर उड़ता हुआ एक सफेद नर बतख[49] मिला।

वह उसको भी अपने तीर से मारना चाहता था कि वह नर बतख भी आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।" राजकुमार ने उसकी ज़िन्दगी भी बख्श दी और आगे बढ़ गया।

उसी समय एक भेंगा खरगोश उसका रास्ता काटता हुआ वहाँ से गुजर गया। राजकुमार ने जल्दी से अपना निशाना साधा और उसको तीर मारने ही वाला था कि वह खरगोश भी आदमी की

[49] Translated for the word "Drake"

आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार ने उसकी भी ज़िन्दगी बख्श दी और अपने धागे के गोले के पीछे पीछे चलता हुआ आगे बढ़ गया।

चलते चलते वह एक झील के पास आया तो झील के किनारे पर उसको एक पाइक मछली[50] पड़ी हुई मिली। वह हवा के लिये तरस रही थी उसको हवा की जरूरत थी।

वह मछली बोली — "मुझ पर दया करो राजकुमार इवान। मुझे इस झील में फेंक दो क्योंकि एक दिन तुमको मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार इवान ने उस मछली को झील में फेंक दिया और फिर अपने धागे के गोले के पीछे चलता हुआ आगे बढ़ गया।

काफी शाम हो जाने के बाद वह एक ओक के पेड़ के पास आया जो बहुत ऊँचा और मजबूत था। उस पेड़ की सबसे ऊँची शाखाओं पर पत्थर का एक बक्सा रखा था जिस तक पहुँचना ही नामुमकिन सा था।

इवान अभी यह सोच ही रहा था कि वह उस बक्से को नीचे कैसे ले कर आये कि कहीं से वह कत्थई भालू वहाँ आ गया। उसने अपने मजबूत हाथों से उस पेड़ का तना पकड़ कर उसको जड़ से उखाड़ लिया।

[50] Pike fish is a large size fish

उसके ऊपर रखा बक्सा नीचे गिर कर टूट गया और उसमें से एक खरगोश निकल कर तेज़ी से भाग गया।

तभी वह भेंगा खरगोश वहॉ आ गया। उसने उसका पीछा किया और उसको पकड़ कर फाड़ डाला। जैसे ही उस भेंगे खरगोश ने उस खरगोश को फाड़ा उसमें से एक बतख निकल कर ऊपर आसमान में उड़ गयी।

पल भर में ही सफेद नर बतख उसके ऊपर था और उसने उस बतख को इतनी ज़ोर से मारा कि उसमें से उसका अंडा निकल पड़ा। अंडा ऊपर से गिरा तो झील में गिरा। यह देख कर तो इवान रो पड़ा। उस झील में अब वह उस अंडे को कैसे ढूँढेगा?

पर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि पाइक मछली उस अंडे को लिये हुए किनारे पर तैरती चली आ रही है। राजकुमार ने तुरन्त ही उस अंडे को तोड़ा और उसमें सुई को ढूँढा। उसमें से सुई निकाल कर उसने उसको मोड़ना शुरू किया।

जितना ज़्यादा वह राजकुमार उस सुई को मोड़ता जाता था वह भयानक पुरानी हड्डियॉ भी अपने काले पत्थर के महल में बैठा उतना ही ज़्यादा ऐंठता जाता था और बल खाता जाता था।

आखिर उसने वह सुई तोड़ दी और उस सुई के टूटते ही वह भयानक पुरानी हड्डियॉ भी मर गया।

जैसे ही राजकुमार ने सोचा कि अब वह राजकुमारी को ले कर आये तो उसके सामने तो राजकुमारी येलेना खुद ही खड़ी थी।

वह एक लम्बी सी सॉस ले कर बोली — "ओह राजकुमार इवान, तुमने यहॉ आने में कितनी देर लगा दी मैं तो इस भयानक पुरानी हड्डियॉ से शादी करने वाली थी। इसने मुझे अपने काबू में कर रखा था।"

आखीर में दोनों मिल गये और रूस वापस लौट गये। वहॉ वे फिर बहुत साल तक खुशी खुशी रहे।

7 फ़ैनिस्ट बाज़[51]

शाप की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के रूस देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि रूस में एक बहुत ही अमीर किसान अपनी तीन बेटियों के साथ रहता था। कूछ दिन बाद उसकी पत्नी मर गयी तो उसकी सबसे छोटी बेटी मारूष्का[52] बोली — "पिता जी आप चिन्ता मत कीजिये घर मैं सँभाल लूँगी।"

और वह एक अच्छी गृहस्थी सँभालने वाली साबित हुई। पर उसकी दोनों बड़ी बहिनें बहुत ही आलसी और कामचोर थीं। उनको कोई भी चीज़ बहुत देर तक खुश नहीं रख सकती थी – न तो कोई पोशाक, न कोई फ्राक, न ही कोई काफ्तान।

एक दिन वह किसान बाजार जाने के लिये तैयार हुआ तो उसने अपनी बेटियों से पूछा कि वह उनके लिये वहाँ से क्या ले कर आये।

उसकी बड़ी बेटियाँ तुरन्त बोलीं — 'पिता जी आप हम दोनों के लिये खूब बढ़िया सिल्क का शाल ले कर आना जिस पर लाल और सुनहरे रंग में फूल बने हों।"

[51] Fenist the Falcon – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[52] Marushka – the name of the youngest daughter

मारूष्का चुप रही तो पिता ने उससे पूछा — "और बेटी तुम्हारे लिये?"

मारूष्का बोली — "पिता जी, मेरे लिये तो बस फ़ैनिस्ट बाज़[53] का एक पंख लेते आइयेगा।"

यह सुन कर किसान बाजार चला गया और जब वह वहॉ से लौट कर आया तो वह अपनी दोनों बड़ी बेटियों के लिये तो दो शाल ले लाया पर फ़ैनिस्ट बाज़ का पंख उसको सारे बाजार में ढूँढने पर भी कहीं नहीं मिला।

कुछ महीने बाद वह फिर बाजार गया तो उसने फिर अपनी बेटियों से पूछा कि वह उनके लिये बाजार से क्या लाये।

उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने कहा कि वह उनके लिये चॉदी के जूते ले कर आये पर मारूष्का ने धीरे से कहा — "पिता जी, मेरे लिये तो वही फ़ैनिस्ट बाज़ का एक पंख लेते आइयेगा।"

उस दिन भी वह किसान सारे दिन बाजार में फ़ैनिस्ट बाज़ का पंख ढूँढता रहा। वह अपनी बड़ी बेटियों के लिये चॉदी के जूते तो खरीद लाया पर फ़ैनिस्ट बाज़ का पंख उसे उस दिन भी कहीं नहीं मिला।

और एक बार फिर वह मारूष्का की मॅगायी हुई चीज़ नहीं ला सका। एक बार फिर उसकी बेटी ने उसको तसल्ली दी — "पिता जी आप बहुत चिन्ता न करें आपको वह फिर मिल जायेगा।"

[53] Translated for the word "Falcon". See its picture above

कुछ महीने बाद वह किसान एक बार फिर बाजार जाने लगा तो उसने अपनी बेटियों से एक बार फिर पूछा कि वह उनके लिये क्या ले कर आये तो उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने उससे कहा कि वह उनके लिये नारंगी रंग के गाउन ले कर आये।

पर जब मारूष्का से पूछा गया तो उसने वही कहा — "पिता जी, मेरे लिये तो वही फ़ैनिस्ट बाज़ का एक पंख लेते आइयेगा।"

पिता बाजार चला गया। उसने अपनी बड़ी बेटियों के लिये नारंगी गाउन तो खरीद लिये पर फैनिस्ट बाज़ का पंख उसको उस दिन भी हर दूकान पर पूछने पर भी कहीं नहीं मिला।

वह बेचारा बड़ा नाउम्मीद हो कर घर लौट रहा था कि रास्ते में उसको एक बहुत ही बूढ़ा मिला। वह बूढ़ा किसान से बोला — "गुड डे भाई। तुम किधर जा रहे हो?"

किसान ने जवाब दिया — "तुमको भी गुड डे भाई। मैं बड़ा दुखी हो कर घर वापस जा रहा हूँ। मेरी सबसे छोटी बेटी ने मुझसे फ़ैनिस्ट बाज़ का एक पंख लाने के लिये कहा था पर मुझे लाख ढूँढने पर भी वह कहीं नहीं मिला।"

वह बूढ़ा आदमी मुस्कुराया। उसने अपनी जेब से बिर्च के पेड़ की छाल का एक बक्सा निकाला और उस किसान से बोला — "जो तुम्हें चाहिये वह मेरे पास है। मुझे मालूम है कि तुम्हारी बेटी इस पंख के लायक है सो यह पंख उसी का है।"

कह कर उस बूढ़े आदमी ने वह पंख बक्से के साथ उस किसान को दे दिया। वह किसान बहुत खुश हो गया।

हालॉकि किसान को वह पंख किसी दूसरे मामूली पंख जैसा ही लगा पर उसने उस पंख को ले कर उस बूढ़े आदमी को धन्यवाद दिया और अपने घर चला गया।

घर पहुँच कर उसने अपनी तीनों बेटियों की चीज़ें उनको दे दीं। उसकी दोनों बड़ी बेटियों ने अपने अपने गाउन पहन कर देखे और अपनी सबसे छोटी बहिन की हॅसी उड़ायी — "इस पंख को तो तुम अपने बालों में लगा लेना और फिर देखना तुम कितनी सुन्दर लगती हो।"

मारूष्का बस ज़रा सा मुस्कुरा दी बोली कुछ नहीं।

उस रात को जब घर में सब लोग सो गये तो मारूष्का ने बक्से में से अपना वह पंख निकाला और नीचे फर्श की तरफ उड़ा दिया। फिर वह फुसफुसायी — "मेरे पास आओ ओ फ़ैनिस्ट, मेरे चमकीली ऑखों वाले बाज़।"

और वह पंख तुरन्त ही एक चमकीली ऑखों वाले नौजवान में बदल गया। वह नौजवान इतना सुन्दर था जितना कि सुबह का आसमान होता है।

दोनों आपस में तब तक बात करते रहे जब तक सुबह पौ नहीं फट गयी। पर पौ फटते ही वह नौजवान फर्श से टकराया और

फिर से चील बन गया। मारूष्का ने अपनी खिड़की खोल दी और वह बाज़ उसमें से हो कर आसमान में उड़ गया।

इस तरह उसने उस नौजवान को तीन रात बुलाया।

लेकिन चौथी रात को उसकी दोनों बड़ी बहिनों ने किसी को अपनी बहिन के कमरे में बातें करते सुन लिया और सुबह को एक बाज़ को उसकी खिड़की से बाहर उड़ते देख लिया।

उस दिन दोनों खुराफाती बहिनों ने अपनी बहिन के कमरे की खिड़की पर एक बहुत ही तेज़ चाकू लगा दिया। जब रात हुई तो जब वह बाज़ वहॉ आया तो उस तेज़ चाकू से टकरा गया। उसके दोनों पंख उसकी धार से कट गये थे।

मारूष्का तो सो रही थी। वह सोती रही उसको कुछ पता ही नहीं चला।

बाज़ एक गहरी सॉस ले कर बोला — "अच्छा विदा प्रिये। अगर तुम मुझे सचमुच प्यार करती हो तो तुम मुझे फिर पा लोगी। पर मुझे पाना इतना आसान भी नहीं होगा।

तुमको धरती के दूसरे छोर तक जाना पड़ेगा। तुमको तीन लोहे के जूते और तीन लोहे के डंडे तोड़ने होंगे और तीन पत्थर की डबल रोटी खानी होंगी।"

रात के अँधेरे में किसी तरह से मारूष्का ने उसके ये शब्द सुन लिये। वह तुरन्त बिस्तर से उठी और अपनी खिड़की की तरफ

भागी पर उसको देर हो चुकी थी। वह बाज़ तो जा चुका था। उसकी खिड़की पर तो बस उसके कुछ खून की बूँदें पड़ी थीं।

मारूष्का बहुत देर तक रोती रही। वह इतना रोयी कि उसके आँसुओं में वे खून की बूँदें बह गयीं।

अगली सुबह वह अपने पिता के पास गयी और बोली — "पिता जी मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मैं अपने प्यार को ढूँढ सकूँ। मैं अपना प्यार ढूँढने जा रही हूँ।"

किसान बेचारा यह सुन कर बहुत दुखी हुआ कि उसकी बेटी इतनी मुश्किल यात्रा पर जा रही है पता नहीं वह फिर उसको कब देख पायेगा। पर उसको मालूम था कि उसको उसे जाने देना ही चाहिये।

सो उसके आशीर्वाद से मारूष्का ने तीन लोहे के जूते बनवाये, तीन लोहे के डंडे बनवाये और तीन पत्थर की डबल रोटियाँ बनवायीं। उन सबको ले कर वह धरती के उस छोर की तरफ अपनी लम्बी यात्रा पर निकल पड़ी।

वह खुले हुए मैदानों में चली, वह अँधेरे जंगलों में से हो कर गुजरी, वह ऊँची ऊँची पहाड़ियों पर चढ़ी।

चिड़ियों ने उसको अपने गीतों से खुश रखा, नदियों ने उसके पैर धोये और अँधेरे जंगलों ने उसका स्वागत किया। किसी जंगली जानवर ने उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचाया क्योंकि उन सबको मालूम था कि वह एक वफादार लड़की थी।

वह तब तक चलती रही जब तक उसका एक लोहे का जूता टूटा, एक लोहे का डंडा टूटा और उसने एक पत्थर की डबल रोटी खा ली।

उसी समय वह जंगल में एक खुली जगह में निकल आयी। वहाँ उसको एक छोटी सी झोंपड़ी दिखायी दी। वह झोंपड़ी मुर्गी के पैरों पर खड़ी थी। वह गोल गोल घूम रही थी और उसमें कोई खिड़की नहीं थी।

मारूष्का बोली — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। तुम अपने पीछे का हिस्सा पेड़ों की तरफ कर लो और अपना मुँह मेरी तरफ कर लो।"

यह सुन कर मुर्गी के पैरों पर खड़ी हुई वह झोंपड़ी घूमती घूमती रुक गयी और मारूष्का उसके खुले दरवाजे के अन्दर बेधड़क चली गयी। उस झोंपड़ी में एक पत्थर की अँगीठी पर बाबा यागा[54] लेटी हुई थी। वह एक पतली सी स्त्री थी जिसकी लम्बी टेढ़ी नाक थी और एक दाँत था जो उसकी ठोड़ी के नीचे तक लटका हुआ था।

मारूष्का उससे डरी नहीं। उसने जादूगरनी को अपने बारे में बताया कि वह क्या करने निकली थी और उससे अपनी सहायता करने की प्रार्थना की।

[54] Baba Yaga – a very famous Russian folktale character, a witch, normally wicked, but sometime she helps too.

बाबा यागा बोली — "मेरी प्यारी बच्ची, तुमको तो अभी बहुत दूर जाना है क्योंकि फ़ैनिस्ट तो बहुत दूर रहता है।

उस देश की रानी एक बहुत ही बुरी जादूगरनी है जिसने तुम्हारे फ़ैनिस्ट को एक जादू का रस पिला दिया है। उस रस के जादू के असर से उसने उसको अपने आपसे शादी करने के लिये भी राजी कर लिया है। पर मैं उसको ढूँढने में तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।

लो यह लो चाँदी की तश्तरी और सोने का अंडा और इनको ले कर उसके महल चली जाओ। हो सकता है कि रानी इनको ख़रीदना चाहे पर तुम इनको उसको तब तक मत बेचना जब तक कि वह तुम को फ़ैनिस्ट बाज़ से न मिलने दे।"

उसके बाद बाबा यागा ने उसको सुनहरे धागे का एक गोला दिया और कहा कि वह उस धागे को जंगल में लुढ़काती चली जाये तो वह उसको उसकी दूसरी बहिन के पास पहुँचा देगा। वह वहाँ से उसको आगे बतायेगी कि उसको क्या करना है।"

बाबा यागा को धन्यवाद दे कर मारूष्का अपने रास्ते पर चल दी। पेड़ों ने उसका रास्ता रोक लिया, जंगल बहुत अँधेरा हो गया और उस अँधेरे में उल्लू भी बोलने लगे।

फिर भी वह चलती गयी चलती गयी जब तक कि उसका दूसरा लोहे का जूता नहीं टूट गया, दूसरा लोहे का डंडा नहीं टूट

गया और उसकी पत्थर की दूसरी डबल रोटी भी खतम नहीं हो गयी।

उसी समय वह जंगल में एक खुली जगह पर आ गयी। वहॉ पर भी उसको एक छोटी सी झोंपड़ी दिखायी दी। वह झोंपड़ी भी मुर्गी के पैरों पर खड़ी थी और वह भी गोल गोल घूम रही थी।

वहॉ जा कर मारूष्का फिर बोली — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। तुम अपने पीछे का हिस्सा पेड़ों की तरफ कर लो और अपना मुँह मेरी तरफ कर लो।"

यह सुन कर मुर्गी के पैरों पर खड़ी वह घूमती हुई झोंपड़ी भी रुक गयी और उसमें खिड़कियॉ और एक दरवाजा खुल गया। मारूष्का उसके खुले दरवाजे के अन्दर भी बेधड़क चली गयी।

उस झोंपड़ी में एक पत्थर की अँगीठी पर एक दूसरी बाबा यागा लेटी हुई थी। यह बाबा यागा अपनी बहिन से भी ज़्यादा बदसूरत और पतली दुबली थी।

मारूष्का ने उसको अपनी कहानी सुनायी और उसको उसकी बहिन के दिये हुए चॉदी की तश्तरी और सोने का अंडा दिखाये। वह बोली — "बहुत अच्छे मेरी प्यारी बिटिया। मैं तुम्हारी सहायता

जरूर करूँगी। यह सोने की सुई और चॉदी का फ्रेम[55] ले जाओ हो सकता है कि वह रानी इनको खरीदना

[55] Frame – a frame of wood or iron or any metal used to kepp the cloth in place to embroider it. See its picture above. In this picture it is round.

चाहे। पर तुम इनको उसको तब तक मत बेचना जब तक वह तुमको तुम्हारे फैनिस्ट से न मिलने दे।

मगर इससे पहले तुमको मेरी बड़ी बहिन के पास जाना पड़ेगा। इसके आगे वह तुमको बतायेगी कि तुमको क्या करना है।"

मारूष्का ने दूसरी बाबा यागा को धन्यवाद दिया और आगे बढ़ गयी। उसने वह सोने के धागे वाला गोला फिर से आगे लुढ़काया और उसके पीछे पीछे पेड़ों के बीच में से हो कर चली।

इस बार पेड़ों की शाखाओं ने उसके कपड़ों की आस्तीनें फाड़ दीं, उसके चेहरे पर खरोंचें डाल दीं, चिड़ियों ने भी कोई गीत नहीं गाया और जंगली जानवर भी उसकी तरफ रास्ते भर देखते रहे। पर वह पीछे देखे बिना ही आगे बढ़ती रही।

धीरे धीरे उसके तीसरे लोहे के जूते भी फट गये, तीसरा लोहे का डंडा भी टूट गया और तीसरी पत्थर की डबल रोटी भी खत्म हो गयी।

उसी समय वह तीसरी खुली जगह में आ निकली। वहॉ भी उसको पहले जैसी एक झोंपड़ी दिखायी दी। वह झोंपड़ी भी मुर्गी के पैरों पर खड़ी थी और घूम रही थी।

वहॉ जा कर मारूष्का फिर बोली — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। तुम अपने पीछे का हिस्सा पेड़ों की तरफ कर लो और अपना मुँह मेरी तरफ कर लो।"

मुर्गी के पैरों पर खड़ी हुई घूमती हुई वह झोंपड़ी भी यह सुन कर तुरन्त रुक गयी और मारूष्का उसके खुले दरवाजे के अन्दर बेधड़क चली गयी।

उस झोंपड़ी में एक पत्थर की अँगीठी पर तीसरी बाबा यागा लेटी हुई थी। यह बाबा यागा अपनी दोनों बहिनों से भी ज़्यादा बदसूरत और पतली दुबली थी।

मारूष्का ने उसको भी अपनी कहानी सुनायी। वह बाबा यागा बोली — "फ़ैनिस्ट चील को पाना आसान नहीं है, प्यारी बेटी। तुम को धरती के आखीर तक जाना पड़ेगा। पर तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।

तुम यह चाँदी की अटेरन[56] लो और यह सोने की तकली[57] लो और इनको ले कर महल चली जाओ।

हो सकता है कि रानी तुमसे इनको खरीदना चाहे पर तुम इनको उसको तब तक मत बेचना जब तक कि वह तुमको तुम्हारे फ़ैनिस्ट बाज़ से न मिलने दे।"

मारूष्का ने उसको भी धन्यवाद दिया और अपना सोने के धागे वाला गोला जमीन पर लुढ़का दिया। वह धागा उसको एक बड़े डरावने जंगल में से ले कर चला।

[56] Translated for the word "Distaff". The spun thread is kept on this. See its picture above.
[57] Translated for the word "Spindle". The cotton is spun from this. See its picture above.

वह अभी बहुत दूर नहीं गयी थी कि उसने किसी के चिंघाड़ने की और पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनायी दी। बहुत सारे उल्लू वहॉ से उड़े और उसके चारों तरफ घूमने लगे। बहुत सारे चूहे उसके पैरों में इधर उधर घूमने लगे। खरगोश रास्ते पर कूदने लगे। वह डर कर रुक गयी।

तभी एक बड़ा सा भूरा भेड़िया वहॉ आ गया और मारूष्का से बोला — "डरो मत मारूष्का। आओ मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुमको महल तक ले चलता हूँ।"

मारूष्का उसकी पीठ पर बैठ गयी और भेड़िया उसको सोने के धागे के गोले के पीछे पीछे हवा की तेज़ी से उड़ा कर ले चला।

घास के हरे हरे मैदान पलक झपकते निकल गये। पहाड़ जो आसमान तक ऊँचे ऊँचे थे वे सब भी आसानी से पार हो गये।

आखिर वे एक किस्टल के महल के पास आ पहुँचे। उसका सोने का गुम्बद सूरज की रोशनी में चमक रहा था। रानी उस महल की सफेद मीनार से नीचे झॉक रही थी।

मारूष्का ने भेड़िये को धन्यवाद दिया, अपनी गठरी उठायी और मीनार के नीचे की तरफ चली। वहॉ पहुँच कर वह बहुत ही नम्रता से बोली — "योर मैजेस्टी, क्या आपको किसी ऐसी नौकरानी की जरूरत है जो सूत काते, बुनाई और कढ़ाई करे?"

रानी बोली — "ओ लड़की, अगर तुम यह तीनों काम कर सकती हो तो अन्दर आ जाओ और काम करना शुरू कर दो।"

इस तरह मारूष्का उस महल में नौकरानी का काम करने लगी।

एक दिन मारूष्का ने सारा दिन बिना रुके काम किया और जब शाम आयी तो उसने अपना सोने का अंडा और चॉदी की तश्तरी ली और उसे रानी को दिखाया।

तुरन्त ही वह अंडा उस तश्तरी में घूमने लगा और घंटिया बजने की आवाज सुनायी देखने लगी। अचानक उस तश्तरी में रूस के सारे बड़े बड़े शहर दिखायी देखने लगे।

यह देख कर तो रानी बड़े आश्चर्य में पड़ गयी। वह बोली — "चॉदी की यह तश्तरी और सोने का यह अंडा तुम मुझे बेच दो।"

मारूष्का बोली — "योर मैजेस्टी, ये बेचने के लिये तो नहीं हैं पर आप इनको ऐसे ही रख सकती हैं अगर आप मुझे चमकीली ऑखों वाले फ़ैनिस्ट बाज़ से मिलने दें।"

रानी राजी हो गयी बोली — "ठीक है। आज रात को जब वह सो जायेगा तब तुम उसके कमरे में जा सकती हो।"

जब रात हो गयी तो मारूष्का फ़ैनिस्ट बाज़ के कमरे की तरफ चली। वहॉ जा कर उसने देखा कि फ़ैनिस्ट बाज़ तो गहरी नींद सो रहा है।

उसने उसको जगाने की बहुत कोशिश की पर वह उसको जगा नहीं सकी क्योंकि रानी ने उसकी कमीज में जादू की एक पिन लगा दी थी।

उसने उसको जगाने की बहुत कोशिश की उसको पुकारा, उसकी गहरी काली भौंह को चूमा, उसके पीले हाथों को सहलाया पर वह तो सोता ही रहा किसी तरह भी नहीं जागा।

सुबह जब खिड़की से सूरज की किरनें अन्दर आयीं तब तक भी जब वह अपने प्रिय फ़ैनिस्ट को नहीं जगा सकी तो उसको वहाँ से वापस आना पड़ा।

अगले दिन फिर उसने खूब मन लगा कर काम किया और शाम को उसने अपना चाँदी का फ्रेम और सोने की सुई निकाली।

सुई ने अपना काम अपने आप करना शुरू कर दिया तो मारूष्का बुड़बुड़ायी — "तू एक ऐसा कपड़ा काढ़ जिससे वह रोज सुबह अपनी आँखों की भौंहें साफ कर सके।"

इस बार मारूष्का ने रानी को सुई और फ्रेम दिखाया तो रानी उसको भी तुरन्त ही खरीदने के लिये कहने लगी। मारूष्का ने फिर वही जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, ये बेचने के लिये तो नहीं हैं पर आप इनको ऐसे ही रख सकती हैं अगर आप मुझे फ़ैनिस्ट को एक बार फिर से देखने दें।"

रानी फिर राजी हो गयी — "ठीक है, तुम उसको आज की रात फिर देख सकती हो।"

जब रात हुई तो मारूष्का एक बार फिर से फ़ैनिस्ट के सोने के कमरे में गयी पर वह तभी भी बहुत ही गहरी नींद सो रहा था। बहुत उठाने पर भी वह नहीं उठा।

वह बोली — "ओह मेरे प्यारे फ़ैनिस्ट, मेरे बहादुर चमकीली ऑखों वाले बाज़ जागो और मुझसे बात करो।"

पर वह तो गहरी नीद ही सोता रहा क्योंकि चालाक रानी ने उसके बालों में कंघी करते समय एक जादू की पिन लगा दी थी जिसकी वजह से मारूष्का उसको लाख कोशिश करने पर भी नहीं जगा सकी।

सुबह होने पर उसको अपनी कोशिश छोड़ देनी पड़ी और उसको वहॉ से आना पड़ा।

उस दिन भी उसने सारा दिन खूब लग कर काम किया और जब शाम हुई तो उसने अपनी चॉदी की अटेरन और सोने की तकली निकाली और रानी को दिखायी।

पहले की तरह से रानी ने इस बार भी उनको उससे खरीदना चाहा पर मारूष्का ने फिर से वही जवाब दिया — "योर मैजेस्टी, ये चीज़ें बेचने के लिये नहीं हैं पर आप इनको ऐसे ही रख सकती हैं अगर आप मुझे फ़ैनिस्ट को एक बार आखिरी बार फिर से देखने दें।"

रानी यह सोचते हुए फिर राजी हो गयी कि मारूष्का उसको जगाने में कामयाब नहीं हो पायेगी क्योंकि आज उसको वह जादू का

रस पिला कर सुला देगी। वह बोली— "ठीक है, तुम उसको आज की रात एक बार और देख सकती हो।"

रात हुई और मारूष्का एक बार फिर आखिरी बार फ़ैनिस्ट के सोने वाले कमरे में घुसी। फ़ैनिस्ट और दिनों की तरह से आज भी गहरी नींद सो रहा था।

मारूष्का फिर बोली — "ओह मेरे प्यारे फ़ैनिस्ट, मेरे बहादुर चमकीली ऑखों वाले चील जागो और मुझसे बात करो।"

पर वह नहीं जागा तो वह नाउम्मीद हो कर रो पड़ी। फ़ैनिस्ट सारी रात सोता रहा और हालॉकि मारूष्का ने उसको जगाने की फिर से बहुत कोशिश की पर वह नहीं उठा।

अब सुबह होने वाली थी सो मारूष्का ने अखिरी विदा कहने और बाहर जाने से पहले उसके काले बालों में अपना हाथ फेरा कि उसका एक गर्म ऑसू उसके गालों से लुढ़क कर फ़ैनिस्ट के कन्धे पर गिर पड़ा। इससे फ़ैनिस्ट की मुलायम खाल जल गयी।

इस जलन को महसूस कर के वह हिला और उसने अपनी ऑखें खोल दीं। मारूष्का को वहॉ देख कर वह तुरन्त उठ बैठा और बोला — "अरे, क्या यह तुम हो? मेरा खोया हुआ प्यार।"

कहते कहते वह रो पड़ा। उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे। "इसका मतलब यह है कि तुमने तीन लोहे के जूते और तीन लोहे के डंडे तोड़ दिये और तीन पत्थर की डबल रोटियॉ भी खा लीं।

तुम धरती के इस कोने तक यात्रा कर आयीं। अब हमको कोई अलग नहीं कर सकता मारूष्का, कोई नहीं।"

अब फ़ैनिस्ट का जादू टूट चुका था सो वह मारूष्का को शाही दरबार में ले गया। वहॉ दरबार ने फैसला दिया कि रानी को देश निकाला दे दिया जाये और मारूष्का को वहॉ की रानी बना दिया जाये क्योंकि वह बहुत बहादुर थी, अक्लमन्द थी और मजबूत थी।

और फिर ऐसा ही हुआ।

8 सबसे सुन्दर राजकुमारी[58]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक राजा था। एक बार वह बहुत बीमार पड़ गया तो उसकी इच्छा हुई कि वह एक बड़े खरगोश का पानी[59] पिये।

उसके एक अकेला बेटा था सो वह अपने पिता के लिये एक बड़ा खरगोश ढूँढने के लिये निकला। जब राजकुमार उसको ढूँढने के लिये जंगल की तरफ सड़क पर जा रहा था तो सड़क पर लगी हैज[60] के पास से एक बड़ी खरगोश भागी और उसका रास्ता काट कर जंगल की तरफ भाग गयी।

राजकुमार ने उसका पीछा किया। वह बड़ी खरगोश तो बहुत ही तेज़ भागने वाली थी फिर भी वह उसके पीछे जंगल में भागा चला गया कि अचानक वह बड़ी खरगोश जमीन में बने एक छेद में घुस गयी।

---

[58] The Most Beautiful Princess – a folktale from Brazil, South America. Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_26.html Taken from the Book : "Tales of Giants From Brazil", by Elsie Spicer Eells. NY, Dodd, Mead and Company, Inc. 1918. 12 Tales. This book is given at the above Web Site.

[59] Translated for the words "Broth of Hare" – broth is the water in which some meat or vegetables are boiled and then that water is strained. This watere is called broth. Thus the broth may be nonvegetarian as well as vegetarian. Hare is a rabbit like animal but it is a bit bigger than that. See its picture above.

[60] Hedge is normally a low wall, 3-6 feet tall, otherwise it can be high also – as high as 10-12 feet, made of very densely planted plants. It works as a boundary wall to protect the house from thieves and animals etc. See its picture above.

राजकुमार उसको देखता रहा और उसके पीछे पीछे ही भागता रहा कि उसको लगा कि वह तो एक बहुत बड़ी गुफा में है। उस गुफा में पीछे की तरफ एक बहुत ही बड़ा बड़े साइज़ का आदमी[61] है। इतने बड़े साइज़ का आदमी तो उसने पहले कभी देखा ही नहीं था। उसको देख कर राजकुमार डर गया।

बड़े साइज़ का आदमी अपनी इतनी जंगली गहरी आवाज में बोला कि उसकी आवाज तो सारी गुफा में कई बार गूँज गयी — "ओहो। तो तुम क्या समझते हो कि तुम मेरी बड़े खरगोश को पकड़ लोगे? देखो बजाय इसके कि तुम उसे पकड़ो मैंने तुम्हें पकड़ लिया है।"

कहते हुए बड़े साइज़ के आदमी ने अपना बड़ा सा हाथ बढ़ा कर राजकुमार को पकड़ लिया और धीरे से उसको एक बक्से में फेंक दिया जो उसी गुफा के एक कोने में रखा हुआ था।

फिर उसने उस बक्से का ढक्कन बन्द किया और एक बड़ी से चाभी से उसका ताला भी लगा दिया।

राजकुमार को अब उस बक्से में बहुत ही ज़रा सी हवा मिल रही थी जो उस बक्से के ढक्कन के एक बहुत ही छोटे से छेद में से आ रही थी। अपनी इस हालत से राजकुमार को लगा कि वह अब ज़्यादा देर तक ज़िन्दा नहीं बचेगा।

[61] Translated for the word "Giant"

घंटों गुजर गये। कभी तो राजकुमार सो गया पर अक्सर वह लेटा हुआ अपने बीमार पिता के बारे में सोचता रहा और यह सोचता रहा कि वह वहॉ से कैसे निकल सकता है और फिर कैसे अपने पिता के पास वापस जा सकता है।

अचानक उसने ताले के छेद में चाभी घूमने की आवाज सुनी। उसने देखा कि बक्से का ढक्कन खुला और उसके सामने एक बहुत ही सुन्दर लड़की खड़ी है जैसी उसने कभी दुनियॉ में तो देखना तो दूर सपने में भी नहीं देखी थी।

वह मुस्कुरा कर बोली — "मैं ही वह बड़ी खरगोश हूॅ जिसका पीछा करते हुए तुम इस गुफा तक आये थे। मैं एक राजकुमारी हूॅ जिस पर जादू डाल दिया गया है। हालॉकि दिन में मुझे एक बड़ी खरगोश बन जाना पड़ता है पर रात में मैं अपने रूप में इस गुफा में घूमने के लिये आजाद हूॅ।

तुम इस मुसीबत में केवल इसी लिये पड़े क्योंकि तुमने मेरा पीछा किया और मुझे तुम्हारे लिये इस बात का बहुत दुख है। पर अब मैं तुमको इस बक्से से बाहर निकाल रही हूॅ।"

राजकुमार बोला — "तुम इतनी सुन्दर हो कि मै यहॉ हमेशा के लिये रह सकता हूॅ और तुम्हारी ऑखों में देखता रह सकता हूॅ।"

राजकुमारी फिर मुस्कुरायी और बोली — "पर दिन में तो तुम एक बड़ी खरगोश को ही देखोगे। और रात तो हमेशा रहती नहीं।

इसके अलावा वह बड़े साइज़ का आदमी कभी भी यहाँ वापस आ सकता है। अभी तो वह केवल शिकार खेलने गया है क्योंकि उसको लगता है कि तुम उसके शाम के खाने के लिये काफी नहीं हो।

तुम बेवकूफ न बनो। मैं तुमको इस गुफा से बाहर जाने का रास्ता बताती हूँ। बस फिर तुम जल्दी जल्दी अपने घर भाग जाना।"

राजकुमार ने उसको उसकी मेहरबानी के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसकी सलाह के अनुसार ही काम किया। राजकुमारी ने उसको गुफा से बाहर जाने का रास्ता दिखा दिया और वह उसी रास्ते से जल्दी जल्दी अपने घर दौड़ गया।

पर जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसका पिता तो मर चुका था। सारे महल में शोक छाया हुआ था।

राजकुमार को इतना ज़्यादा दुख हुआ कि उसको लगा कि वह तो अब उस महल में रह ही नहीं पायेगा। अपने पिता के दफन के बाद वह एक खाना बदोश की तरह से घूमने चल दिया।

चलते चलते राजकुमार एक नदी के पास पहुँचा। वहाँ उसने एक मछियारे से अपने कपड़े बदल लिये जो उसी नदी के किनारे पर मछलियाँ पकड़ रहा था। क्योंकि वह एक राजकुमार की तरह से पहचाना नहीं जाना चाहता था।

अब वह एक मछियारा लग रहा था। इसी शक्ल में वह एक राज्य से दूसरे राज्य में घूमता रहा। वह अपने खाने के लिये मछली पकड़ लेता था और इसी से अपना काम चलाता था।

इस बीच उसने देखा कि उसका मछली पकड़ने वाला जाल जो उस मछियारे ने उसको अपने कपड़ों के साथ दिया था वह जाल तो बहुत ही आश्चर्यजनक जाल था। समुद्र की सबसे बड़ी मछली भी उस जाल को नहीं तोड़ सकती थी।

वह बोला "लगता है कि इस जाल को तो नौसा सिन्होरा[62] का आशीर्वाद मिला हुआ है।"

अपने घूमने के दौरान वह एक शहर में आया जहॉ एक उत्सव मनाया जा रहा था। वहॉ का महल बहुत सारे चमकीले रंगों की झंडियों से सजाया गया था।

हर शाम को राजा का दूत सवार हो कर शहर की सड़कों पर यह कहता घूमता "हमारे राज्य की राजकुमारी दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी है। हमारे राज्य की राजकुमारी दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी है।"

राजकुमार को अभी भी वह राजकुमारी याद थी जिसने उसको उस बड़े साइज़ वाले आदमी की गुफा में रखे बक्से में से बाहर निकाला था।

[62] Nossa Senhora

उस दूत की बात को सुन कर राजकुमर ने सोचा कि यह राजकुमारी उस राजकुमारी से ज़्यादा सुन्दर नहीं हो सकती। मुझे उसे अपनी ऑख से देख कर ही यह पता करना पड़ेगा कि वह दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी है या नहीं।

सो राजकुमार उस राजकुमारी को देखने के लिये महल के दरवाजे तक गया। जल्दी ही वह महल के छज्जे पर आ गयी और छज्जे पर लगे बार्जे[63] से नीचे झॉकने लगी।

वह बहुत सुन्दर थी पर उसकी नाक थोड़ी सी टेढ़ी थी। गुफा की राजकुमारी से उसकी तुलना बिल्कुल भी नहीं की जा सकती थी।

मछियारे के वेश में जो राजकुमार था वह बोला — "यह राजकुमारी किसी भी तरह से दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी नहीं है। मैं एक राजकुमारी को जानता हूँ जो इससे कहीं ज़्यादा सुन्दर है।"

जो लोग उसके पास खड़े थे उन्होंने जब यह सुना तो उन्होंने उसका कहा शाही चौकीदारों को बताया। शाही चौकीदारों ने उसको बड़ी बेदर्दी से पकड़ा और राजा के पास ले गये।

[63] Translated for the word "Railing used for a Balcony". See its picture above.

राजा बोला — "तो तुम वह मछियारे हो जो यह कहते हो कि मेरी बेटी दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी नहीं है। तुमने कहा मैंने सुना कि तुम एक ऐसी राजकुमारी को जानते हो जो इससे ज़्यादा सुन्दर है।

मैं एक न्यायप्रिय राजा हूॅ नहीं तो यह कहने पर मैं तुमको तुरन्त ही मार देने का हुक्म दे देता पर न्यायप्रिय होने के नाते मैं ऐसा नहीं करूॅगा। मैं तुमको जो कुछ तुमने कहा है उसको साबित करने का एक मौका देता हूॅ।

अगर तुम अपने कहे को साबित न कर सके और उस राजकुमारी को मुझे न दिखा सके जो मेरे दरबार की नजर में मेरी बेटी से ज़्यादा सुन्दर है तो तुम अपनी ज़िन्दगी से हाथ धो बैठोगे।

याद रखना कि उसकी सुन्दरता को साबित करने के लिये उसे तुम्हें यहॉ मेरे दरबार में लाना पड़ेगा।"

राजकुमार बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद योर मैजेस्टी। अगर आप मुझे इस शर्त को पूरा करने के लिये दो हफ्ते देंगे और अगर आप उस रात को उत्सव मनाने का वायदा करें तो मैं अपके दरबार के सामने दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी लाने की कोशिश करूॅगा।"

मछियारे की बात सुन कर राजा तो आश्चर्यचकित रह गया। उसको तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उस जैसा मछियारा

बहुत सारी राजकुमारियों को जानता भी होगा। फिर भी उसने उसको वहॉ से जाने और राजकुमारी को लाने की इजाज़त दे दी।

राजकुमार जल्दी से अपने घर लौटा और एक बार फिर से जंगल की ओर उसी रास्ते पर चल दिया जिस पर एक बार पहले वह अपने बीमार पिता के लिये बड़ी खरगोश ढूँढने गया था।

उसे जल्दी ही वह जगह मिल गयी जहॉ उस बड़ी खरगोश ने उसका रास्ता काटा था। फिर उसने उस रास्ते को भी याद करने की कोशिश की जिस पर चल कर वह उसका पीछा करते करते जंगल में अन्दर तक चला गया था।

जब वह जंगल में गया तो उसको लगा कि वहॉ तो बाढ़ आयी थी। पानी ने वे सब निशान मिटा दिये थे जहॉ गुफा का रास्ता था।

जहॉ भी उसको लगा कि वहॉ गुफा हो सकती थी वहॉ वहॉ उसने खोदा भी पर उसको वहॉ कोई भी ऐसी जगह नहीं मिली जो किसी गुफा के घुसने की जगह हो सकती थी।

तब उसने पास में ही एक नयी जगह खोदा तो उसको एक रास्ता मिला जिसके शुरू में ही एक बहुत बड़ा दरवाजा था। गुफा के अन्दर जाने का रास्ता उस दरवाजे के पीछे था।

राजकुमार ने अपनी पूरी ताकत लगा कर उस दरवाजे को खटखटाया तो वह दरवाजा बहुत ही ज़रा सा खुला और उसमें से एक छोटी सी बुढ़िया का चेहरा दिखायी दिया।

वह बुढ़िया बोली — "मैं राजकुमारी की आमा[64] हूँ। मुझे लगता है कि तुम वही राजकुमार हो जिसकी वह उसके ऊपर जो मुसीबतें टूट पड़ी हैं उनसे उसको आजाद करवाने की उम्मीद कर रही है।"

यह सुन कर राजकुमार तो परेशान हो गया और बोला — "क्या हो गया मेरी राजकुमारी को जिसने मेरी जान बचायी। मैं सचमुच में राजकुमार हूँ पर मुझे आश्चर्य है कि आपने मुझे एक मछियारे की पोशाक में भी पहचान लिया।"

बुढ़िया आमा बोली — "राजकुमारी ने मुझे बताया था कि मैं तुमको तुम्हारी ऑखों में मुस्कुराहट देख कर तुम्हें पहचान लूँगी। मैंने तुम्हारे कपड़ों की तरफ तो देखा ही नहीं। हालॉकि तुम्हारा चेहरा उदास है पर तुम्हारी ऑखों में मुस्कुराहट है। आओ गुफा में आ जाओ और फिर मैं तुम्हें बताती हूँ कि क्या हुआ।"

यह सुन कर राजकुमार अन्दर चला गया। उसके गुफा में जाते ही बुढ़िया ने गुफा का दरवाजा बन्द कर दिया।

बुढ़िया बोली — "तुम्हारे जाने के बाद जैसे ही वह बड़े शरीर वाला आदमी वापस लौटा वह राजकुमारी पर बहुत नाराज हुआ क्योंकि उसने तुमको यहॉ से बच कर भाग जाने में सहायता की थी।

उसने उसको बड़ी बेरहमी से पकड़ा और जिस बक्से में तुम बन्द थे उसी बक्से में उसने तुम्हारी जगह उसको बन्द कर दिया।

[64] Ama – maybe Ama means "Mother" or "Nanny" or "Caretaker"

जब राजकुमारी ने तुमको बक्से में से बाहर निकाला था उसने उस बक्से की चाभी उसी समय फेंक दी थी। बड़े साइज़ के आदमी ने उसको ढूँढने की बहुत कोशिश की पर वह उसको कहीं नहीं मिली।

इससे वह और भी ज़्यादा गुस्सा हो गया। अब क्योंकि वह उस बक्से को बन्द नहीं कर सकता है तो सारा दिन वह उस बक्से के ऊपर बैठा रहता है जब तक राजकुमारी बड़ी खरगोश के रूप में रहती है।

रात को जब वह वहाँ से चला जाता है तो वह गुफा के दरवाजे के चारों तरफ एक बहती हुई नदी बनाता है और गुफा के दरवाजे पर पहरा देने के लिये एक मछली तैनात कर देता है।

यह मछली ऊपर नीचे तैरती रहती है और राजकुमारी को बहुत बुरे बुरे नामों से पुकारती रहती है कि जब वह अपने रूप में भी होती है तो उन बुरे नामों को सहन न करने की वजह से तभी भी वह बक्से में ही बन्द रहती है और अपने कानों में रुई ठूँसे रहती है।

तुम यहाँ अच्छे समय पर आये हो। बड़े साइज़ का आदमी अभी अभी गुफा के बाहर गया है। जैसे ही तुम गुफा के अन्दर घुसे होगे तो गुफा के बाहर पानी ऊपर चढ़ गया होगा क्योंकि मुझे मछली की आवाज सुनायी पड़ रही है।"

यहाँ तक कि जब बुढ़िया बोल रही थी राजकुमार भी मछली की आवाज सुन पा रहा था। वह राजकुमारी के लिये इतने बुरे बुरे शब्द

बोल रही थी कि राजकुमार खुश था कि राजकुमारी अपने कानों में रुई लगाये हुए बक्से में बन्द बैठी थी।

वह आमा से बोला — "आप भी राजकुमारी के साथ जा कर बक्से में ही बैठ जाइये। मैं बहुत अच्छा तैराक हूँ। मैं जा कर गुफा का दरवाजा खोलता हूँ और बाहर तैर जाता हूँ।

बक्सा लकड़ी का बना हुआ है सो वह पानी के ऊपर तैर जायेगा। आप दोनों बक्से के अन्दर होंगी सो आप लोग भी सुरक्षित रूप से पानी के ऊपर तैर जायेंगी।"

बुढ़िया आमा ने कुछ शक से पूछा — "पर तुम इस मछली से बच कर कैसे तैरोगे?"

राजकुमार बोला — "उसके लिये आप चिन्ता न करें। मेरे पास मछली पकड़ने वाला एक जाल है जो इतना मजबूत है कि सबसे बड़ी और सबसे भयानक ताकतवर मछली भी उस जाल को नहीं तोड़ सकती। मैं उस जाल में उस मछली को पकड़ लूँगा। आप बस थोड़ा इन्तजार करें और देखें कि क्या होता है।

इस बीच आप राजकुमारी के कानों से रुई निकाल लें और उसको बता दें कि मैं आ गया हूँ। अब वह डरे नहीं और कुछ देर तक के लिये बस उसी बक्से में बन्द रहे।"

राजकुमार के कहने के अनुसार बुढ़िया आमा उस बक्से में बन्द हो गयी और राजकुमार ने गुफा का दरवाजा खोल दिया।

मछली राजकुमार की तरफ भयानक रूप से दौड़ी पर राजकुमार ने उसको अपने मजबूत जाल में तुरन्त ही पकड़ लिया। जाल में मजबूती के साथ पकड़ कर राजकुमार पानी की सतह के ऊपर तैर गया और नदी के किनारे तक पहुँच गया।

वहाँ जा कर उसने मछली को मार दिया और उसकी खाल निकाल कर अपनी जेब में रख ली।

जैसा कि राजकुमार ने कहा था इतने में बक्सा भी तैरता हुआ ऊपर आ गया। राजकुमार ने उसके ऊपर भी अपना जाल डाल कर उसको किनारे पर खींच लिया। बुढ़िया आमा और सुन्दर राजकुमारी दोनों उस बक्से में से बाहर निकल आयीं।

राजकुमारी इतनी सुन्दर थी कि राजकुमार तो उसके सामने अपने घुटनों पर गिर पड़ा। राजकुमारी की सुन्दरता ने राजकुमार की आँखें चौंधिया रखी थीं।

राजकुमारी बोली — "इस सारे समय मुझे मालूम था कि तुम जरूर आओगे। मुझे यह भी मालूम था कि तुम मुझको मेरी मुश्किलों से जरूर आजाद कराओगे पर तुमको यहाँ आने में बहुत देर हो गयी।"

तब राजकुमार ने उसको अपनी कहानी बतायी कि उसके संग क्या हुआ था। फिर वह बोला — "तुमने बड़े साइज़ के आदमी से मेरी ज़िन्दगी बचायी। मुझे बहुत खुशी है कि मैं तुम्हारी ज़िन्दगी

बचाने के काम आ सका। पर अब मैं तुमसे फिर से अपनी ज़िन्दगी बचाने की प्रार्थना करता हूँ।"

तब उसने उसको उत्सव की बात बतायी तो राजकुमारी बोली मैं तुम्हारे साथ उस उत्सव में जरूर जाऊँगी। यह तो मेरे लिये बहुत अच्छी बात है कि वह उत्सव रात को है।

राजकुमारी और उसकी आमा राजकुमार के साथ उस राज्य की ओर तुरन्त ही चल दीं जिस राज्य का राजा यह दावा करता था कि उसकी बेटी ही दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी है।

जिस रात वे वहॉ पहुँचे वही रात उत्सव की रात थी। वहॉ के राजा को विश्वास था कि या तो राजकुमार उस राजकुमारी को ले कर ही नहीं आ पायेगा या फिर वह राजकुमारी ही इतनी सुन्दर नहीं होगी जितनी सुन्दर उसकी अपनी बेटी थी सो उसने अपनी सारी फौज को इस बात के लिये तैयार कर रखा था कि जैसे ही राजकुमार आये वे उसका गला काट दें।

किसी को यह विश्वास ही नहीं था कि एक मछियारा किसी राजकुमारी को भी ले कर वहॉ आ सकता है किसी सुन्दर राजकुमारी की बात तो छोड़ो।

राजकुमार ने राजकुमारी को बक्से में छिपाया हुआ था और उसकी आमा उस बक्से को अपने सिर रख कर ला रही थी। जब वह गरीब मछियारा आमा के साथ राजा के सामने जा कर खड़ा हुआ तो राजा के दरबार में एक बहुत ज़ोर का ठहाका गूँज गया।

"हमको तो पता था कि यह मछियारा कभी भी एक राजकुमारी को अपने साथ नहीं ला सकेगा और वह भी हमारी राजकुमारी से ज़्यादा सुन्दर राजकुमारी को। देखो तो वह उसकी जगह किसको ले कर आया है।"

और यह कह कर तो वे लोग इतना हॅसे इतना हॅसे कि उनसे खड़ा भी नहीं हुआ गया।

राजा के सिपाही मछियारे को मारने के लिये उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़े तो राजकुमार गिड़गिड़ाया — "मेहरबानी कर के मुझे कुछ पल का समय तो दो।"

सुन कर राजा ने अपना सिर हॉ में हिलाया कि उसको अभी न पकड़ा जाये।

राजकुमार ने मछियारे के कोट की जेब में हाथ डाला और उस बड़ी मछली की चॉदी की खाल निकाली जो उसने बड़े साइज़ के आदमी की गुफा के दरवाजे पर बहती हुई नदी में पकड़ी थी। उस खाल के टुकड़ों से तो बहुत सुन्दर रुपहला बादल सारे कमरे में भर गया।

पर राजा को तो अभी भी कोई राजकुमारी दिखायी नहीं दी तो उसने फिर अपने सिपाहियों को इशारा किया कि वे मछियारे को पकड़ लें।

वे फिर उसको पकड़ने के लिये आगे बढ़े तो राजकुमार फिर से गिड़गिड़ाया — "मेहरबानी कर के मुझे दो पल और दो।" सो राजा फिर रुक गया।

उसके बाद उसने अपनी जेब से मछली की सुन्हरी खाल के टुकड़े निकाले तो वहॉ का कमरा बहुत सुन्दर सुनहरी बादल से भर गया।

"बस एक मिनट और।" और फिर उसने अपनी जेब से जवाहरात जड़ी मछली की खाल के टुकड़े निकाले तो उस कमरे में चमकते हुए जवाहरातों का बादल भर गया। सब लोग यह देख कर आश्चर्य में पड़ गये पर राजकुमारी अभी भी कहीं नहीं थी।

जैसे ही ये सब बादल साफ हो गये तो वहॉ बुढ़िया आमा और मछियारे के बीच में दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी खड़ी थी। ऐसी सुन्दर राजकुमारी जैसी किसी ने न पहले कभी सचमुच में देखी थी और न किसी ने सपने में देखी थी।

यह देख कर राजा के सिपाही पीछे हट गये। राजा और उसके दरबारी फर्श की तरफ देखने लगे।

राजा बोला — "ओ मछियारे तुम अपनी शर्त जीत गये। मेरी बेटी दुनियॉ की सबसे सुन्दर राजकुमारी नहीं है। मैं देख रहा हूॅ कि मेरी बेटी की नाक थोड़ी सी टेढ़ी है।"

राजकुमार राजकुमारी और बुढ़िया आमा राजकुमार के राज्य वापस चले गये। वहॉ जा कर राजकुमार और राजकुमारी की शादी हो गयी। शादी की बहुत बड़ी दावत हुई।

उसी पल से जबसे राजकुमारी के शरीर पर उन मछलियों की खाल के टुकड़े पड़े उस पर पड़ा जादू टूट गया ओर उसके बाद वह फिर कभी बड़ी खरगोश नहीं बनी।

वह और राजकुमार खुशी खुशी बहुत दिनों तक साथ साथ रहे। बड़े साइज़ के लोगों ने भी उनको फिर कभी परेशान नहीं किया हालॉकि वे भी उस जंगल से फिर हमेशा के लिये दूर ही रहे।

List of Stories in “Curses in Folktales-1”

1. Pome and Peel
2. The Queen of The Three Golden Mountains
3. The Thieving Dove
4. The Little Shepherd
5. The Apple Girl
6. The Man Who Came Out Only at Night
7. The Prince Who Married a Frog
8. The three Dogs
9. Serpent King
10. Pippina the Serpent
11. The Mouse With the Long Tail
12. The Crab Prince

List of Stories in “Curses in Folktales-2”

1. Beauty and the Beast
2. The White Cat
3. Raven
4. The Frog Prince-1
5. The Frog Prince-2
6. Baker's Idle Son
7. The Three Golden Oranges
8. The Mouse Princess
9. The Enchanted Pig
10. East o' the Sun and the West o' the Moon

List of Stories in “Curses in Folktales-3”

1. The Calabash Child
2. The Guardian of the Pool
3. The Seven Headed Snake
4. The Hare and the Spirit
5. The Snake Chief
6. The Frog Princess
7. Fenist the Falcon
8. The Most Beautiful Princess

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022